मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
दुर्गा यन्त्र
अगस्त
-९२
Scanned by CamScanner

शरदोत्सव--११-१०-६२

शरद पूर्णिमा महोत्सव

सिद्ध महारात्रि

जीवन में जब रोग, शोक और पाप बढ़ जाते हैं तो विशेष प्रकार की विपत्तियां उत्पन्न होती हैं, क्यों ऐसा होता है कि एक परिवार में सबका स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहता है और दूसरे परिवार में कोई न कोई बीमार अवश्य ही बना रहता है ? जीवन में उन्नति नहीं होना भी एक प्रकार से दोष है। इसी प्रकार पूर्व जन्म कृत पाप भी व्यक्ति के भाग्य को निर्बल बनाते हैं। केवल श्रम के द्वारा उन्नति सम्भव नहीं है। जब तक श्रम रूपी भूमि पर साधना की आहुति सम्पन्न नहीं की जाती, तब तक जीवन में सफलता दूर ही दूर रहती है, ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में छोटी-छोटी समस्याओं में भी उलझा रहता है, एक चिन्ता दूर करता है तो दूसरी चिन्ता, समस्या सामने आ खड़ी होती है।

शरद रात्रि : महारात्रि

मूल रूप से शरद पूर्णिमा एक विशेष तांत्रोक्त साधना रात्रि है, इस रात्रि का प्रभाव ही अपने आप में निराला होता है। चन्द्रमा की स्थिति उसकी किरणों का प्रभाव इस प्रकार हो जाता है कि सम्पूर्ण वायु मण्डल में एक चुम्बकीय आकर्षण समा जाता है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में साधक जो साधना सम्पन्न करता है, उसमें उसे निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है, इस अवसर पर तीन प्रयोग विशेष रूप से सम्पन्न किये जाने चाहिए।

१-रोग निवृत्ति एवं दीर्घायु अनुष्ठान

पत्नी, पुत्र, पुत्री अथवा स्वयं के किसी भी प्रकार के देह सम्बन्धित रोग निवृत्ति एवं दीर्घायु साधना के लिए सर्व श्रेष्ठ मुहूर्त सिद्ध प्रयोग।

२-पाप शमन (निवृत्ति) अनुष्ठान

पूर्व जन्म कृत दोष अथवा इस जन्म में जाने अनजाने किये गये पाप दोषों का जब तक शमन नहीं हो जाता; तब तक जीवन में उन्नति हो ही नहीं सकती। शरद पूर्णिमा महारात्रि पर्व तांत्रोक्त साधना से इस प्रकार के पूर्ण दोष के निवृत्ति सम्भव है।

३-महाविद्या महावाणी भारती सिद्धि रात्रि

शरद पूर्णिमा का सीधा सम्बन्ध सरस्वती सिद्धि से है और सतोगुणी महासरस्वती का प्रादुर्भाव चतुर्भुजा

वर्ष-१२

अंक-८

अगस्त-१९९२

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०६

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

निर्गुणं निर्मलं शान्तं जंगमं स्थिरमेव च।
व्याप्तं येन जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

जो निर्गुण, निर्मल और शान्त हैं जिनसे समस्त जड़ चेतन जगत् व्याप्त है उन श्री गुरुदेव को नमस्कार है।

Scanned by CamScanner

समाचार—सूचनाएं

मारीशस में महायज्ञ

मारीशस में इस महान आयोजन की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं, मारीशस **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के प्रमुख **श्री निर्दोष सिंह लडाई** ने इस आयोजन की पूर्ण जिम्मेदारी निभाने का संकल्प लिया है, इस हेतु वे पूरे मारीशस में भ्रमण एवं प्रचार कर रहे हैं, इस सम्बन्ध में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** भारत से भी कुछ सदस्यों को आमन्त्रित किया जाय, ऐसा उनका निश्चय है, पूज्य गुरुदेव की यात्रा, महायज्ञ इत्यादि कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने हेतु पत्रिका सम्पादक **श्री योगेन्द्र निर्मोही** तथा सहसम्पादक **डॉ० श्यामल कुमार बनर्जी** मारीशस की यात्रा पर गये हैं और आप सबको यह जान कर सुखद आश्चर्य होगा कि मारीशस जैसे छोटे, किन्तु हिन्दू धर्मनिष्ठ देश में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की २१ शाखाओं की स्थापना हो चुकी है, सभी शाखाओं पर नियमित रूप से कार्यक्रम संपन्न होते हैं, यज्ञ एवं शिविर का आयोजन नवम्बर के अन्तिम सप्ताह तथा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में रखा गया है, शारदीय नवरात्रि दिल्ली में इस सम्बन्ध में कुछ विशेष घोषणाएं की जाएंगी।

शारदीय नवरात्रि महोत्सव

उत्तर भारत के साधकों ने इस बार बहुत जोर देकर कहा कि गुरु पूर्णिमा शिविर आयोजन का पुण्य लाभ यदि बम्बई को प्राप्त हुआ है तो यह नवरात्रि महोत्सव उत्तर भारत के केन्द्र बिन्दु दिल्ली को प्राप्त होना चाहिए। इस नवरात्रि महोत्सव की तैयारियों के लिए—लखनऊ, रायबरेली, वाराणसी, फैजाबाद, गोरखपुर, कानपुर, अम्बाला, यमुनानगर, चण्डीगढ़, भोपाल, इन्दौर, जबलपुर आदि स्थानों पर कमेटियां बन गई हैं और यह आयोजन अब तक का सबसे भव्य आयोजन होगा। यह सम्पूर्ण आयोजन **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के तत्वावधान में हो रहा है, आशा है कि कम से कम दो हजार साधक इस शिविर में भाग लेंगे। दूरस्थ स्थानों के साधकों से निवेदन है कि वे अभी से अपना रिजर्वेशन अवश्य करा लें। शिविर स्थल का पता नोट कर लें—

श्री सनातन धर्म सभा पंजाबी बाग

रोड नं०-२७ 'ए', पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली

श्री मोहनलाल चोपड़ा-फरीदाबाद ने नवरात्रि शिविर में साधकों के खान-पान की व्यवस्था की जिम्मेदारी का संकल्प लिया है, **श्री बी.बी. गुप्ता**, **श्री मयंक पाण्डेय**, **श्री सुशील गुप्ता**-कानपुर, **श्री सेलरग्रीन नम्बरदार** आदि ने शिविर हेतु विशेष जिम्मेदारी ली है, आशा है और भी शिष्य स्वयं आगे आकर इस महान आयोजन में किसी न किसी कार्य की जिम्मेदारी अवश्य लेंगे।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

भारत के बम्बई शहर में १४ जुलाई को गुरु-पूर्णिमा महोत्सव अत्यन्त धूमधाम से मनाया गया। यह आयोजन कई दृष्टियों से विशेष यादगार रहेगा, पूज्य गुरुदेव ने शिष्यों को इस बार एक नवीन सन्देश दिया है और बम्बई में कुछ विशेष निर्णय

भी लिये गये जिसके फलस्वरूप **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के कार्यों में महाविस्तार हो सकेगा।

आयोजन

भारत के कई शहरों में यह गुरु पूर्णिमा आयोजन विशेष रूप से सम्पन्न हुआ। पत्रिका कार्यालय को इस सम्बन्ध में निरन्तर समाचार या सूचनाएं चित्रों के साथ प्राप्त हो रही हैं। जगदलपुर में **श्री राधाकृष्ण कुशवाहा** के संयोजन में सौ से अधिक साधकों ने भाग लिया। **श्रीमती चन्द्रावती देवी**–अलीगढ़, **श्री कृष्ण कुमार राई**-गंगटोक, **श्री कृष्णदत्त शर्मा**–मंडी, **श्री राजेश कटियार**–कानपुर (देहात), **श्री एन० आर० वर्मा**-सागर, **श्री पूर्णेश चौबे**–धार, **श्री राधेश्याम नामा**-दिल्ली, **श्री रणछोड़ भाई**-सूरत, **श्री आर० जी० काशी**-विलासपुर, **श्री रतिलाल के टेलर**-गोधरा, **श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा** हैदराबाद, **श्री सनद कुमार अधिकारी**–काठमाण्डू, **श्री सुरेश सिन्हा**-पटना, **श्री सत्यवादी भंजदेव**-गंजम-(उड़ीसा), **श्री तेजनारायण सिंह राठौड़**-बाराबंकी, **श्री वेदानन्द झा**-देवघर (विहार) इत्यादि साधकों के संयोजन में उपरोक्त सभी स्थानों पर धूमधाम से गुरु-पूर्णिमा कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

विदेशों में भी

विदेशों से भी उत्साह वर्द्धक आयोजन के समाचार प्राप्त हुए हैं। अमेरिका के वाशिंगटन शहर में **श्री वीरेन्द्र श्रीवास्तव** के संयोजन में समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें पांच सौ भारतीय तथा विदेशियों ने भाग लिया तथा गुरु पूजन सम्पन्न किया। **श्री प्रदीप सिंह** मिशीगन स्टेट अमेरिका से पचास से अधिक साधकों के साथ वाशिंगटन पहुंचे। ह्यूस्टन (अमेरिका) में **श्रीमती कुसुम बहिन** एवं **श्री यशवन्त पटेल** के संयोजन में तथा न्यूजर्सी में **श्रीमती गौरी जोशी** के संयोजन में गुरु पूर्णिमा महाआयोजन सम्पन्न किया गया। इंग्लैण्ड के बर्मिंघम शहर में **डॉ. रजनी पटेल** के संयोजन में तथा एसेक्स (लन्दन) में **श्री अशोक कुमार वर्मा** एवं उनकी पत्नी ने गुरु पूर्णिमा महाआयोजन सम्पन्न किया।

गुरुदेव के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछताछ हेतु तथा स्वास्थ्य शुभ कामना हेतु पत्रिका कार्यालय को आठ हजार पांच सौ से अधिक पत्र देश-विदेश से प्राप्त हुए, पूज्य गुरुदेव ने सभी को आशीर्वाद एवं धन्यवाद प्रदान किया है।

विशेष उपहार

पत्रिका के पाठक, सदस्य, साधक एवं शिष्य अपना नाम, पूरा पता, कार्य व्यवसाय के बारे में लिख कर अपने फोटो के साथ निम्न पते पर भेजे—

व्यवस्थापक : ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
नियर पीतमपुरा, नई दिल्ली

पत्र प्राप्ति के बाद शीघ्र ही चुने हुए सदस्यों को विशेष उपहार भेजने की व्यवस्था की जा रही है।

समर्पित साधक : नींव के पत्थर

सिद्धाश्रम साधक परिवार भारत द्वारा शारदीय नवरात्रि शिविर नई दिल्ली में **श्री निर्बोध सिंह लडाई** का हार्दिक अभिनन्दन किया जायेगा एवं पूज्य गुरुदेव द्वारा इन्हें **"पट्ट शिष्य रत्न"** की उपाधि से विभूषित किया जायेगा।

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

पत्रिका के इसी अंक में प्रकाशित **गोल्डन कार्ड योजना** के अन्तर्गत जिस महान विचार को साकार रूप दिया जा रहा है, उसके परिणाम स्वरूप शीघ्र ही पूरे भारत वर्ष में ११ केन्द्रों की स्थापना हो सकेगी। सदस्य इस महाआयोजन में पूर्ण उत्साह से भाग लेंगे, ऐसा विश्वास है। इस सम्बन्ध में अनौपचारिक तौर पर जो विचार विमर्श हुआ है उस सम्बन्ध में कई स्थानों से पत्र आये हैं कि उनके यहां **निखिलेश्वरानन्द ध्यान केन्द्र** की स्थापना हो।

कृपया यह ध्यान रखें कि इस योजना के अन्तर्गत बैंक ड्राफ्ट **"सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना"** के नाम से भेजें।

इस पुण्यदायी योजना में जन हितार्थ तथा **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के विस्तार का ही विचार है। इसके द्वारा तीव्र गति से वे कार्य सम्पन्न हो सकेंगे जिनका विचार कई वर्षों से चल रहा है।

हिमालय का सिद्ध योगी—(बंगला भाषा में)

श्रीमती गीता बनर्जी एक समर्पित शिष्या हैं और उन्होंने पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित **हिमालय का सिद्ध योगी** पुस्तक का बंगाली भाषा में अनुवाद कर इसे छपवाने की विशेष व्यवस्था की है।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव बम्बई में पूज्य गुरुदेव के कर-कमलों द्वारा इस पुस्तक का विमोचन किया गया। **श्रीमती गीता बनर्जी** को पूरे पत्रिका परिवार की ओर हार्दिक बधाई।

यदि साधक चाहें तो अन्य भारतीय भाषाओं में भी पूज्य गुरुदेव की रचनाओं का अनुवाद सम्पन्न कर सकते हैं। विद्या का विकास सामान्य जन की भाषा में ही संभव है। आप शिष्यों में से गुजराती, उड़िया, तेलगू, मराठी आदि भाषाओं के कई जानकार हैं। लातुर (महाराष्ट्र) की **डॉ० मालती कानाडे** पूज्य गुरुदेव की तीन विशिष्ट रचनाओं का मराठी भाषा में अनुवाद कर रहीं हैं, पत्रिका परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक शुभ कामनाएं।

निखिल दिव्य ज्योति रथ यात्रा

पिछले कुछ समय से गुरु पूर्णिमा आयोजन एवं वर्षा ऋतु के कारण यह रथ यात्रा कार्यक्रम रोक दिया गया था। अब यह यात्रा पुनः प्रारम्भ की जा रही है। उत्तर-प्रदेश तथा बिहार के कई स्थानों से साधकों के शिकायती पत्र आये हैं कि उनके यहां अभी तक रथ यात्रा कार्यक्रम सम्पन्न नहीं हो सका है। इस सम्बन्ध में पूर्ण यात्रा कार्यक्रम साधकों के निश्चित पत्र प्राप्त होने पर ही दिया जायेगा। संकल्पवान साधक अपने यहां मीटिंग कर शीघ्र पत्र लिखें।

सिद्धाश्रम साधक परिवार—मुजफ्फरपुर (बिहार)

गुरु पूर्णिमा महोत्सव बम्बई में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** मुजफ्फरपुर शाखा के अध्यक्ष **श्री ज्वाला प्रसाद जमुआर** तथा उनके सहयोगी **श्री कृष्णकुमार आर्य** ने पूज्य गुरुदेव के समक्ष संकल्प लिया कि हम मुजफ्फरपुर तथा आस-पास के क्षेत्रों से पांच हजार साधक पत्रिका सदस्य इस वर्ष दीपावली तक अवश्य बना देंगे और इस सम्बन्ध में आधे से अधिक ठोस कार्य तो शारदीय नवरात्रि तक सम्पन्न कर गुरुदेव के सम्मुख प्रस्तुत कर देंगे।

संकल्प के धनी मुजफ्फरपुर (बिहार) **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाइयां एवं शुभ कामनाएं।

"सिद्धाश्रम साधक परिवार" की अन्य शाखाएं भी ऐसे ही महासंकल्प लेकर कार्य करेंगी, ऐसा विश्वास है। ●

विशेष : इस पत्रिका के पृष्ठ संख्या ८ पर छपे हुए शारदीय नवरात्रि शिविर स्थल का पता बदल कर इस प्रकार है—श्री सनातन धर्म सभा, पंजाबी बाग, रोड नं०-२७ 'ए', पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली।

शारदीय नवरात्रि पर्व

(२७-६-६२ से ४-१०-६२ तक)

– याद करो गुरु पूर्णिमा पर गुरुदेव ने क्या कहा था ?
– इस शारदीय नवरात्रि पर सब कुछ अनोखा होगा
– अवसर आ गया है सिद्धियां प्राप्त करने का
– वक्त की तेज रफ्तार से आगे बढ़ने का
– दुखों के सागर से बाहर निकलने का

❀ पीड़ाओं से मुक्त होकर
❀ सुन्दर जीवन जीने का समय आ रहा है
❀ सिद्धि प्राप्त जीवन ही तो जीवन है
❀ बाकी सब बेकार है

– इस नवरात्रि में गुरुदेव के समक्ष मिलन होगा
– मां जगदम्बे का अपने वरद पुत्रों से
– वरद हस्त बढ़ेगा और यह वरद हस्त होगा शिष्य के मस्तक पर

गीली लकड़ी की तरह सुलग-सुलग कर धुंआ निकालते हुए नहीं जीना है, जीना है तो प्रचण्ड ज्वाला के साथ। इस ज्योति को जगाने के लिए हे जगदम्बे! तुम्हें वरदान देना ही पड़ेगा।

यह उत्सव नहीं है, यह कोई मनोरंजन का समय नहीं है
यह तो साधना समर्पण का यज्ञ है
जिसमें मन्त्र घोष उठेगा, हृदय के केन्द्र बिन्दु से
मां चाहे तुम किसी भी रूप में आओ, हमें साक्षात् दर्शन देना होगा
क्योंकि हमारी तपस्या में पुकार है, सत्य का बल है।

इस सिद्धि पर्व पर

आप सब की उपस्थिति आवश्यक है
हजारों-हजारों हाथ शक्ति का सम्मान कर सिद्धि का वरण करेंगे।

शारदीय नवरात्रि

(२७-९-९२ से ४-१०-९२ तक)

- लक्ष्मी तो मां दुर्गा का चैतन्य स्वरूप है
- इस युग में लक्ष्मी साधना ही जीवन की पूर्णता हैं
- जीवन में ऋद्धि-सिद्धि, धन-धान्य, समृद्धि, ऐश्वर्य, सम्पदा एवं वैभवकारक

सहस्राक्षी

लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि साधना

– जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक ऐसी साधना, जो घर में अटूट, भंडार ऋद्धि-सिद्धि तथा चतुर्मुखी प्रगति देने में सहायक

– लक्ष्मी साधना तो फिर भी हो सकती है, पर "सहस्राक्षी लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि साधना" तो सर्वथा गोपनीय रही है, और उच्च स्तर के योगियों को ही इस क्रम की जानकारी है

– पहली बार एक दुर्लभ एवं गोपनीय साधना, यह अवसर चूक गये तो हमेशा के लिए चूक जाएंगे।

जीवन में पुत्र सुख, वैभव सुख, राज्य में उन्नति तथा समस्त भोगों में पूर्णता

लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि साधना

एक ऐसी साधना, जिसे आप चूकना नहीं चाहेंगे।

Scanned by CamScanner

शारदीय नवरात्रि

(२७-९-९२ से ४-१० ९२ तक)

★ चैतन्य सिद्धि पर्व

★ कुण्डलिनी का एक-एक चक्र जाग्रत करना है

★ इस बार साधक को साध्य के सम्मुख उपस्थित होना है

★ गुरुदेव की विराट सत्ता के तले

❀ प्रत्यक्ष आह्वान करना है

❀ पूज्य प्रभु के मन्त्रों की हुंकार जयघोष के साथ

❀ अपना स्वर मिला कर

❀ प्राप्त कर लेना है सब कुछ

★ यह शारदीय नवरात्रि चेतना के नौ द्वार खोलेगी, क्योंकि साधक इस बार संकल्प की शक्ति से तीव्र रूप में हैं

★ गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानन्द जी महाराज द्वारा शक्ति का चक्र प्रवाहित कर दिया जायेगा

★ एक नया संगीत उठेगा और मां जगदम्बा के साकार रूप में हम उनसे वर मांग कर जीवन की अपूर्णताओं को पूर्ण कर देंगे

❀ काट फेकेंगे वे पाश जो जकड़े हैं हमारे जीवन को

❀ यह तो जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है

❀ आपको आना ही है ।

शारदीय नवरात्रि— (२७-९-९२ से ४-१०-९२ तक)

- इस बार चैतन्य शक्ति महोत्सव
- गुरुधाम दिल्ली के तत्वावधान में
- सब साधकों को, शिष्यों को दिल्ली ही आना है
- साधक गुंजायमान कर देंगे- मन्त्रघोष से दिल्ली के वातावरण को।
- यह महान शिविर आयोजित होगा दिल्ली में।

: शिविर स्थल :

श्याम वल्लभ हरिहर श्री
सूर्यमन्दिर
श्री मोती नाथ संस्कृत महाविद्यालय
बसई दारापुर, रमेश नगर,
नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-११००१५
रमेश नगर बस स्टाप के पास

समय पर दिल्ली पहुंचने की तैयारी कर दें, अपना रिजर्वेशन करा लें। विशेष जानकारी इन फोन नम्बरों पर प्राप्त कर सकते हैं।

गुरुधाम दिल्ली	: ७१८२२४८
अशोक गोयल दिल्ली	: ३५३३८६
सुभाष शर्मा दिल्ली–कार्यालय	: ५५८११३६
घर	: ५०४४११

जहां शिव हैं वहां सब कुछ है

शिव सिद्धि अमोघ कवच

शिव कवच स्तोत्र तो परम पाशुपतास्त्रेय है

क्यों ऐसा होता है कि जब कष्ट और पीड़ा होती है, तभी हम साधना की ओर प्रवृत्त होते हैं, क्या साधना केवल दुखी व्यक्तियों के लिए ही है, साधना द्वारा शरीर एवं मन की शुद्धि होती है और उस शुद्धि क्रिया द्वारा हम महाशक्ति का आवाहन कर उसे अपने भीतर जाग्रत करते हैं। दिन प्रति-दिन के क्रिया-कलाप में हम कितनी ही बार झूठ बोलते हैं, कुछ पाने के लिए विविध उपायों का सहारा लेते हैं। अपने आप पर नियन्त्रण न रखते हुए दूषित प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते रहते हैं, कुछ ऐसी आदतें पाल लेते हैं, जिनसे बाद में सहज छुट-कारा नहीं मिल सकता है। जब भीतर की शक्ति ही पूर्ण रूप से जाग्रत नहीं है तो व्यक्ति कितना ही क्रिया-कलाप क्यों न करे उसे जीवन में सफलता नहीं मिल सकती। यह सिद्ध बात है कि दूसरों के सहारे जीवन नहीं जिया जा सकता, यदि आप स्वयं बली हैं तो सभी आपका सम्मान करेंगे और यह बल आत्म शक्ति, इच्छा शक्ति के जागरण से ही सम्भव है।

तन्त्र तथा मन्त्र के आदि देव भगवान शिव की पूजा साधना समस्त कष्टों के निवारण में समर्थ है, जब हम भगवान शिव और उनकी शक्ति दुर्गा का ध्यान करते हैं, तो हम उस महान आदि शक्ति का आवाहन करते हैं जिससे वह आदि शक्ति हमारे भीतर की शक्ति को जाग्रत कर हमें चैतन्य बना दे और जब भीतर की शक्ति जाग्रत होती है तो मार्ग अपने आप मिलने लगता है, एक के बाद एक उपाय प्राप्त होते हैं, जो भी कार्य हाथ में लेते है वह

आत्म बल से ही पूर्ण हो जाता है।

शिवोऽहम् शिवोऽहम्

जो साधक भगवान शिव की साधना स्तुति करता है, उसके घोर से घोर कष्ट दूर हो जाते हैं, शिव साधना से तो मृत्यु के निकट पहुंचा प्राणी भी यमराज को वापस भेजने में समर्थ रहता है, ज्ञात-अज्ञात सभी पाप-दोषों से निवृत्ति शिव साधना से ही हो सकती है। रोग, शोक तथा पीड़ा शिव कृपा से तुरन्त शान्त होती है तथा जो साधक नियमित रूप से शिव साधना करता है, वह निश्चय ही दीर्घायु को प्राप्त करता है। भूत-प्रेत, पिशाच, दैत्य, राक्षस भी भगवान शिव के भक्त हैं। जो साधक शिव साधना करता है, उन्हें ये सब किसी प्रकार की पीड़ा नहीं पहुंचा सकते, शिव स्तुति करता हुआ साधक यदि आधी रात को भी श्मशान में चला जाय तो उसे कोई कष्ट नहीं होता, ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपने घर में बैठा है।

साधना में साधक की भावना का विशेष महत्व है, शिव सम्बन्धी साधनाएं तो कई हैं, लेकिन मैंने यह पाया है कि जब साधक नियमित रूप से शिव कवच का पाठ करता है तो ऐसी स्थिति हो जाती है मानो उसने अमोघ रक्षा कवच धारण किया हुआ है। विशेष बात यह है कि जब ब्रह्मा सृष्टि का निर्माण कर रहे थे, तो उन्हें अपनी सृष्टि की रचनाओं को बचाने की और उसके विस्तार की विशेष आवश्यकता थी। इसके लिए एक ही उपाय था शिव स्तुति, यदि भगवान शिव की कृपा हो तो कोई भी विध्वंस नहीं हो सकता, कोई भी विनाशकारी शक्ति अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। इस कारण ब्रह्मा ने शिव और शक्ति दोनों की महा साधना की और इस अमोघ फल-प्रदायक शिव कवच की रचना की।

रुद्रयामल तन्त्र में विशेष टिप्पणी सहित लिखा है कि शिव कवच मनुष्य के लिए वरदान है जिसने यह शिव कवच धारण कर लिया वह अतुल्य बल, शक्ति का स्वामी बन जाता है, शिव की कृपा उसे इस प्रकार प्राप्त होती है मानो गंगा अपने पूरे प्रवाह के साथ शिव जी के मस्तक पर प्रवाहित हो रही है। ऐसे साधक के लिए शिव ही सब कुछ होते हैं, और वह अपना प्रत्येक कार्य शिव को समर्पित कर देता है।

श्री शिव कवच साधना

साधक यह महा साधना कभी भी कर सकता है, शिव साधना के लिए सभी मुहूर्त सिद्ध हैं, शिव तो बाधाओं को काटने वाले हैं, इसलिए शिव साधना में किसी भी प्रकार की बाधा अपना प्रभाव डाल ही नहीं सकती।

यह साधना साधक रात्रि में भी कर सकता है और दिन में भी। लेकिन कुछ नियमों का पालन आवश्यक है—

- इस साधना में सर्वप्रथम तो साधक एकान्त स्थान में साधना सम्पन्न करें और साधना के सम्बन्ध में किसी को न बताएं।
- इस साधना में साधक निराहार रह कर साधना सम्पन्न करें तथा प्रतिदिन शिव की पूजा विधि-विधान सहित करें।
- इस साधना में केवल **रुद्राक्ष माला** का ही प्रयोग किया जाता है, अन्य माला का प्रयोग वर्जित है।
- यदि साधक के पास **पारद शिवलिंग** है तो उसकी स्थापना इस साधना के समय अवश्य करें, अन्यथा कोई भी सिद्ध शिवलिंग की स्थापना की जा सकती है।
- इस साधना में शिव पूजन में आवश्यक सामग्री— कपूर, धूप, दीप, अगरबत्ती, तेल का दिया, मौली, सफेद फूल, नैवेद्य, केसर, कुंकुम, चन्दन, को व्यवस्था पहले से कर लें।
- इस साधना में मूल पूजन **शिव कवच** का है, उसका पूजन पूर्ण रूप से होना चाहिए, आगे

पूजन विधि दी जा रही है।

साधना में साधक पीली धोती धारण करें कमर से ऊपर कोई भी वस्त्र धारण न करें, पूजन प्रारम्भ करने से पहले चन्दन घिस कर अपने ललाट पर कानों पर तथा भुजाओं पर अवश्य लगा दें और रुद्राक्ष माला धारण कर लें।

पूजन विधान

साधकों को यह तो ज्ञात होगा कि शिव पूजा में एक विशेष प्रकार की जलहरी का प्रयोग किया जाता है, जिसमें दुग्ध मिश्रित जल भरा जाता है और नीचे शिव-लिंग की स्थापना की जाती है, उसी प्रकार इस साधना में भी शिवलिंग तथा जलहरी की स्थापना करनी है और जिस पात्र में यह स्थापना करें उसी पात्र में शिवलिंग के आगे **अमोघ शिव कवच** तथा **शिवयन्त्र** भी स्थापित कर दें। सर्वप्रथम जलहरी तथा शिवलिंग का पूजन करें, तत्पश्चात् अपने गले में धारण किये हुए **रुद्राक्ष माला** को अपने सामने रख कर निम्न मन्त्र से इसका पूजन करें—

माले माले महा-माये सर्व शक्ति स्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

अब जलहरी से जल शिवलिंग पर गिरता जायेगा और साधक अपने हाथ में **रुद्राक्ष माला** लेकर '३ॐ नमो शिवायै' मन्त्र की पांच माला का जप उच्चारण के साथ करें।

जब यह जप पूरा हो जाय तो अपने सामने स्थापित **रक्षा कवच** एवं **शिव यन्त्र** को शुद्ध जल से धोकर एक दूसरे पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें, चन्दन से पूजन करें और हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ें—

विनियोग

अस्य श्री शिव कवच स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसदाशिव रुद्रो देवता। ह्रीं शक्तिः। रं कीलकं। श्रीं ह्रीं क्लीं बीजं। श्रीसदा-शिव-प्रीत्यर्थे शिव कवच स्तोत्र जपे विनियोगः॥

न्यास

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रं स्वतंत्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अतुल्यशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं काल-कण्ठमरिन्दमम्।
सहस्रकरमत्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥
अथापरं सर्वपुराणगुह्यन्निःशेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपत्प्रमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते।

अमोघ सिद्धि शिव कवच स्तोत्र

नमस्कृत्वा महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणां॥
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥

हृत्पुण्डरीकान्तर-सन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्त-नभोऽवकाशं ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानन्दमयं महेशं ॥

ध्यानावधूताखिल-कर्मबन्धश्चिरं चिदानन्द-निमग्न-चेताः ।
षडक्षर-न्यास-समा-हितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन-रक्षां ॥

मां पातु देवोऽखिल-देवतात्मा संसार कूपे पतित गभीरे ।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्र मूलं धुनोतु मे सर्वमघहृदिस्थं ॥

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मया-नन्दघन-श्चिदात्मा ।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात् ॥

यो भू स्वरूपेण विभात विश्वं पायात् स भूमेगिरीशोऽष्टमूर्तिः ।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति सञ्जीवन सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥

कल्पावसावे भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः ।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादि-भीतेरखिलाच्च तापात् ॥

प्रदीप्त विद्युत् कनकावभासो विद्यावराभीति-कुठार-पाणिः ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्त्रं ॥

कुठार-खेटांकुश-पाश-शूल-कपाल-ढक्काक्ष-गुणान् दधानः ।
चतुर्मुखो नीलरुचि-स्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्यां ॥

कुन्देन्दु-शंख-स्फटिकावभासो वेदाक्ष माला वरदाभयांकः ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योधिजातोऽवतु मां प्रतीच्यां ॥

वराक्ष-मालाभय-टंक-हस्तः सरोज-किञ्जल्क-समानवर्णः ।
त्रिलोचनश्चारु-चतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥

वेदाभयेष्टांकुश-पाश-टंक-कपाल-ढक्काक्ष-शूलपाणिः ।
सित-द्युतिः पंचमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परम-प्रकाशः ॥

मूर्द्धानमव्यान् मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः ।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्र हारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥

पायाच्छ्रुती में श्रुति-गीत-कीर्तिः कपोल-मव्यात् सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥

कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाक-पाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥

ममोदरं पातु गिरीन्द्र-धन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी ।
हेरम्ब-तातो मम पातु नाभिं पायात् कटिं धूर्जटिरीश्वरो मे ॥

ऊरु-द्वयं पातु कुबेर-मित्रो जानु-द्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात् ।
जंघा-युगं पुङ्गव-केतुरव्यात् पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्य-पादः ॥

महेश्वरः पातु दिनादि-यामे मां मध्य-यामेऽवतु वामदेवः ।
त्रियम्बकः पातु तृतीय-यामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्य-यामे ॥

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २६ पर देखें)

पूर्ण समृद्ध, धनवान एवं अपने शहर के ऐश्वर्ययुक्त
एवं लक्ष्मी पति लोगों में नाम गणना कराना
आपका स्वप्न नहीं, आपका पूर्ण अधिकार है
और ऐसा हो सकता है, दीपावली के अवसर पर
एक नये, मौलिक एवं चमत्कारिक इस तांत्रिक प्रयोग से

हम जानते हैं कि यह सूचना थोड़ी समय से पहले है

● पर नहीं

१- दीपावली पर्व आने में मात्र पैंतालिस दिन बचे हैं।

२- यह पत्रिका आप तक पहुंचने के बाद आप प्रपत्र भर कर भेजें, यहां प्राप्त हो, और सामग्री आप तक पहुंचने में तीस दिन लग जाते हैं।

३- और यदि आप प्रपत्र भेजने में पांच-सात दिन भी विलम्ब करते हैं, तो सामग्री सही समय पर आप तक नहीं पहुंच पाती।

४- और यह अद्भुत, आश्चर्यजनक अवसर आपके हाथ से निकल जायगा।

●● यदि यह प्रयोग आपने करने का निश्चय कर ही लिया है, तो फिर विलम्ब मत करिये, आज ही अभी, इस प्रपत्र को सावधानी से भर कर लिफाफे में डाल कर उस पर पता लिखिये —

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)

●●● और यह अद्भुत, चमत्कारिक रूप से सफलतादायक प्रयोग है—

शत प्रतिशत ऐश्वर्य एवं धन प्रदायक

तांत्रिक साधना से अभिमन्त्रित

सिद्धाश्रम संस्पर्शित

पूर्ण सिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र

(एवं अन्य सामग्री के साथ महालक्ष्मी पैकेट)

इस दीपावली पर्व पर

* इस पैकेट या यन्त्र के द्वारा कोई विशेष मन्त्र जप की जरूरत नहीं।
* कोई विशेष साधना की भी जरूरत नहीं।

● केवल इस महायन्त्र को पैकेट के साथ बताये हुए तरीके से, बताये हुए विशेष मुहूर्त में घर में या दुकान पर स्थापित करने की जरूरत है

●● क्योंकि यह सिद्धाश्रम संस्पर्शित पैकेट है। क्योंकि यह विशेष तन्त्र पूजन से सिद्ध पैकेट है, क्योंकि यह अपने आप में ही सफलतादायक है।

यदि आप पत्रिका सदस्य हैं–

तब तो यह पैकेट 'सर्वथा मुफ्त में' ही आपको प्राप्त हो सकता है, यह सुविधा केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों को ही सुलभ हो सकेगी।

न्यौछावर

इस उत्तम कोटि के पैकेट में "पूर्ण सिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र" के

अलावा भी आवश्यक यन्त्र और सामग्री है, जिसकी न्यौछावर ३००)रु० है।

पर आप

पत्रिका सदस्य हैं तो अगले दो वर्षों का पत्रिका शुल्क तीन सौ रुपये (एक वर्ष का पत्रिका शुल्क एक सौ पचास रुपये है) के एवज में यह पैकेट सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।

● इस प्रकार आप अगले दो वर्षों के लिए पत्रिका सदस्य बन जाएंगे, और आपको ९३–९४ के लिए पत्रिका शुल्क भेजने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

●● और यह उपहार मुफ्त में ही आपको प्राप्त हो जायगा।

●●● यदि आप पंचवर्षीय या आजीवन सदस्य हैं तो अपने किसी रिश्तेदार या मित्र को सन् ९३ के नव वर्ष पर उपहार स्वरूप यह पत्रिका भिजवाइये, आप उसका नाम व पूरा पता लिख भेजिये, हम उसे तो आपकी तरफ से दो वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजेंगे ही, और आपको अभी यह आश्चर्यजनक सफलता दायक पैकेट भेज देंगे, जिससे आप दीपावली के अवसर पर यह प्रयोग कर सकें।

अभी आप धनराशि मत भेजिये

★ हमें आप पर भरोसा है. आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र साफ-साफ हिन्दी या अंग्रेजी में भर कर हमें भेज दीजिये।

★★ हम वी०पी० से—तीन सौ रुपये तथा वी०पी० का डाक व्यय बारह रुपये—इस प्रकार ३१२)रुपये की वी०पी० से यह सौन्दर्य युक्त अच्छी तरह से पैक कर पैकेट आपको भेज देंगे।

★★★ जब पोस्टमेन यह पैकेट लेकर आवे, तब धनराशि देकर पैकेट छुड़वा लें।

★★★★ पैकेट भेजते समय हम पत्र द्वारा सूचना देंगे कि पैकेट भेजा जा रहा है। यदि आप घर पर न हों तो घर के सदस्यों को सूचित कर दें कि वे वी०पी० छुड़वा लें।

★★★★★ यदि पैकेट वापस लौट गया तो हम किसी भी हालत में आपको वापिस पैकेट नहीं भेजेंगे, और न भविष्य में भी वी०पी० से कोई सामग्री आपको भेज सकेंगे।

● आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर दें और फाड़ कर अलग कर इसे लिफाफे में डाल कर हमें भेज दें, या अलग पोस्टकार्ड पर इस प्रपत्र को लिख कर भेज दें, या आपके पास टेली-फोन हो तो जोधपुर ०२९१—३२२०९ पर डायल कर पैकेट भेजने की सूचना दे दें, जिससे आपको तुरन्त सामग्री भेजी जा सके, फिर भी प्रपत्र भेजना तो जरूरी ही है।

— — — — — — — यहां से काटिये — — — — — — —

पूर्ण सिद्ध महालक्ष्मी पैकेट

(अन्य समस्त सामग्री एव पूजन विधि के साथ)

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या ________ (इसे आप जरूर भरें)

कृपया मुझे शीघ्र ही उपरोक्त पैकेट अगले दो वर्षों के पत्रिका शुल्क की रियायत के साथ (जो कि मेरा अधिकार है) भेज दें, वी०पी० आने पर मैं उसे छुड़ाने का वायदा करता हूं।

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

या

मैं आजीवन सदस्य/पंचवर्षीय सदस्य हूं. मेरी पत्रिका सदस्यता नं० .... है, कृपया उपरोक्त पते पर मुझे पैकेट भेज दें, मैं धनराशि देकर छुड़ा लूंगा और जब अपको धन-राशि प्राप्त हो जाय तब नीचे लिखे पते पर मेरे मित्र-सम्बन्धी को जनवरी ९३ से दो वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहें—

मेरे मित्र का पूरा नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

पुरश्चरण के बिना सिद्धि कैसे संभव है

पुरश्चरण विधान

चार विशेष अनुष्ठान

जब तक पुरश्चरण सम्पन्न नहीं किया जाता, तब तक मन्त्र सिद्ध नहीं होता, प्रस्तुत लेख में कुछ विशेष प्रयोग हैं, और इनमें सफलता का मूल रहस्य पहले पुरश्चरण, तत्पश्चात् आवश्यक प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, पुरश्चरण द्वारा साधक देवता को जाग्रत करता है, यह पुरश्चरण क्रिया प्रत्येक विशेष प्रयोग से पहले अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना का यह नियम है कि या तो कोई मन्त्र जप अनुष्ठान हाथ में ही न लो और यदि अनुष्ठान प्रारम्भ कर देते हो तो फिर उसे विधि-विधान सहित पूरा करो। जिस प्रकार हम अपनी सांसारिक गतिविधियों में भी नियम से चलते हैं, तभी जीवन सुचारु रूप से चल सकता है (भोजन, शौच आदि दिवस और रात्रि के अलग-अलग कार्य हैं) और सही समय पर सही कार्य सम्पन्न करने से ही अनुकूलता मिलती है, इसी प्रकार साधनात्मक अनुष्ठान का भी कुछ विशेष नियम तथा समय रहता है, जिसे मुहूर्त कहा जाता है, उसी समय सम्पन्न करना चाहिए।

पुरश्चरण विधान

पुरश्चरण विधान में मन्त्र को चैतन्य किया जाता है, आसन की पूजा होती है, आधार शक्ति की पूजा होती है, दीपक को साक्षी रख कर मन्त्र अनुष्ठान का संकल्प लिया

जाता है, भूत शुद्धि इत्यादि क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं, जिससे साधना में साधक शुद्ध होकर अनुष्ठान सम्पन्न करता है, मूल रूप से पुरश्चरण विधान किसी शुभ मुहूर्त में सम्पन्न करना चाहिए इसके लिए जब गुरु पुष्य नक्षत्र हो, ग्रहण योग हो, दीपावली अथवा होली का समय हो, नवरात्रि हो अथवा कोई अन्य मुहूर्त हो तभी पुरश्चरण क्रिया सम्पन्न की जाती है।

विधान

जिस देवता की पूजा करनी हो, उसका चित्र अपने सामने लगाएं तथा साथ ही गुरु चित्र भी स्थापित करें, अपना आसन सामने रखें और उस पर बैठ कर दीपक जलाएं, साधक यह क्रिया स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर के ही करें, अपने सामने ताम्र पात्र में जल और आचमनी अवश्य रखें अब दीपक प्रज्वलित कर निम्न मन्त्रों से एक-एक बार आचमन करें आचमन क्रिया में साधक ताम्र पात्र से आचमनी द्वारा दाहिने हाथ से जल लेकर अपने बाएं हाथ में लेते हुए उसे ग्रहण करता है—

ॐ भूः आत्म तत्वाय स्वाहा ।
ॐ भुवः विद्यातत्वाय स्वाहा ।
ॐ स्वः शिवतत्वाय स्वाहा ।
ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतत्वाय स्वाहा ।

अब हाथ धो लें इसके बाद हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र तीन बार पढ़ कर आसन शुद्धि करें—

आसन शुद्धि मन्त्र

पृथिवीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः कूर्मो देवता सुतलं छन्दः आसन पवित्रीकरणे विनियोगः ।

अब साधक अपने आसन के सामने एक त्रिकोण बनाएं और उस त्रिकोण पर गन्ध, पुष्प, अक्षत, कुंकुम अर्पित करें तथा हाथ में जल लेकर "ॐ आधारशक्ति कमलासनाय नमः" कह कर अर्पण करें तथा अपनी आधार शक्ति पृथ्वी से निम्न प्रार्थना करें—

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना
धृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

तत्पश्चात् अपने बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की उंगलियों से जल से सभी दिशाओं में छींटें मारें और भूत शुद्धि मन्त्र पढ़ें –

अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

अब भैरव पूजन करना है, हर अनुष्ठान में भैरव पूजन आवश्यक है, यदि भैरव की मूर्ति हो तो उसे स्थापित करें अथवा मानसिक रूप से ध्यान करते हुए भैरव की निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें—

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोप म !
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

अब अपने बाएं पैर से जमीन पर तीन बार प्रहार करें तत्पश्चात् भैरव को गन्ध, पुष्प, अक्षत चढ़ाएं तथा दीपक को देखते हुए निम्न मन्त्र बोलें—

ॐ कर्म साक्षिणे दीप देवतायै नमः ।

अब दीपक को गन्ध, पुष्प, अक्षत चढ़ाएं तथा प्रार्थना करें—

भो ! दीप ! ब्रह्म रूपस्त्वं ज्योतिषां प्रभुरव्ययः ।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥

अब साधक अपने कार्य की पूर्ति हेतु जो साधना कर रहा है, उसका सकल्प ले। सकल्प का विधान है कि अपने दाहिने हाथ में जल लेकर अपना नाम, पिता का नाम, अपना गोत्र, मन्त्र का नाम, कामना तथा मुहूर्त का उच्चारण अवश्य करें। नीचे एक उदाहरण स्पष्ट किया जा रहा है —

अमुकस्य पुत्रः अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं अमुक मन्त्रस्य अमुक कामना सिद्धयर्थं अमुक तिथौ

अमुक संख्याकं मन्त्र जपम् अहं करिष्ये ।

ऐसा कह कर जल भूमि पर छोड़ दें । अब साधना में जो माला प्रयोग में ले रहे हैं, उसे स्नान करा कर गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप से पूजन करें फिर माला को हाथ जोड़ते हुए निम्न प्रार्थना करें—

माले माले महामाये सर्व शक्ति स्वरूपिणी ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।

अब माला को सामने रख दें तथा जो विशेष अनुष्ठान करना है, वह प्रारम्भ करें ।

पुरश्चरण प्रक्रिया सम्पन्न करने से मन्त्र जप दशांश ही पूर्ण रहता है, यदि किसी अनुष्ठान में चार लाख मन्त्र जप का विधान है तो यदि साधक पुरश्चरण क्रिया सम्पन्न कर ले तो उसे उसका दशांश चालीस हजार ही मन्त्र जप करना पड़ता है ।

आगे चार विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, जो कि साधक पुरश्चरण की क्रिया सम्पन्न कर अवश्य ही सम्पन्न करें तो तत्काल सफलता मिलती है । इन मन्त्रों का प्रयोग केवल पुरश्चरण के पश्चात् ही किया जाता है और विशेष नियम यह है कि इन चारों अनुष्ठानों को सम्पन्न करते समय अर्थात् जितने दिन अनुष्ठान चले उतने दिन साधक दिन में एक बार भोजन करें भूमि पर अथवा तख्त पर शयन करें, क्रोध पर नियन्त्रण रखें, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, किसी दूसरे का अन्न ग्रहण न करें तभी सफलता प्राप्त होती है ।

१-रोग एवं अपमृत्यु निवारण अनुष्ठान

किसी पुराने शिव मन्दिर में जा कर पहले गणेश जी की और फिर शिव जी की पूजा करें, तत्पश्चात् घर आ कर गणेश तथा शिव दोनों का पूजन करें, गणेश पूजा में "ॐ गं गणपतयै नमः" मन्त्र की एक माला का जप करें, अपने सामने तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष तथा ग्यारह हकीक पत्थर स्थापित करें, इनके चारों ओर सिन्दूर से एक घेरा बना दें, मध्य में शिवलिंग स्थापित कर हाथ में जल लेकर महादेव पूजन का निम्न विनियोग पढ़ें, तथा अंगन्यास और हृदयन्यास करें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री अमृत मृत्युञ्जय मन्त्रस्य कहाले ऋषिः विराट् छन्दः अमृत मृत्युञ्जय सदाशिवो देवता अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणो मम समस्त रोग निरसन-पूर्वकं अपमृत्यु निवारणार्थे जपे विनियोगः ।

कह कर हाथ का जल भूमि पर छोड़ दें, पुनः षडंग-न्यास सम्पन्न करें—

करन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः
जं तर्जनीभ्या नमः
सः मध्यमाभ्यां नमः
मां अनामिकाभ्यां नमः
पालय कनिष्ठिकाभ्यां नमः
पालय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यास

ॐ हृदयाय नमः
जं शिरसे स्वाहा
सः शिखायै वषट्
मां कवचाय हु
पालय नेत्रत्रयाय वौषट्
पालय अस्त्राय फट्

ध्यान

स्फुटित नलिन संस्थं मौलि बद्धेन्दु-रेखा
स्रवदमृत रसार्द्रं चन्द्र वह्न्यर्क-नेत्रम् ।
स्व-कर-लसित मुद्रा पाश वेदाक्ष माल
स्फटिक रक्त मुक्ता गौरमीशं नमामि ।।

मन्त्र

।। ॐ जूं सः मां पालय पालय ।।

इस मन्त्र का सवा लाख जप का अनुष्ठान करना चाहिए और प्रतिदिन पांच हजार मन्त्र जप आवश्यक है। मन्त्र जप अनुष्ठान के पश्चात् पुनः अंगन्यास तथा हृदय-न्यास करें। अब हाथ में जल लेकर— "अनेन मत्कृतेन जपेन श्री अमृत मृत्युञ्जय प्रीयताम्" कह कर जल भूमि पर छोड़ दें। दस अक्षर की यह विद्या मृत्यु को भी मारने वाली कही गई है और जो साधक मन्त्र जप अनुष्ठान के पश्चात् इसका दशांश हवन कर लेता है तो उसे पूर्णतया आरोग्यता प्राप्त होती है, अपमृत्यु दोष निवारण होता है। साधना के पश्चात् **मधुरूपेण रुद्राक्ष** तथा **हकीक पत्थर** शिव मन्दिर में जा कर अर्पित कर दें।

२-भूत-प्रेत बाधा निवारण अनुष्ठान

पुरश्चरण के पश्चात् यह अनुष्ठान प्रबल मानसिक शक्ति वाले साधक को ही सम्पन्न करना चाहिए, कमजोर शक्ति वाले साधक इस अनुष्ठान में घबरा जाते हैं और जब भूत जाग्रत होकर बोलता है, तो वे सहन नहीं कर पाते हैं और अनुष्ठान अधूरा ही छोड़ देते हैं। यह ध्यान रहे कि जो व्यक्ति भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित है, उसी व्यक्ति के मुख से भूत अलग वाणी में बोलता है।

यह प्रयोग रविवार के दिन सम्पन्न करना चाहिए, साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर भूत-प्रेत बाधा से ग्रसित व्यक्ति को अपने सामने बिठा लें, अब अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर १०८ काजल की बिन्दियां लगाएं, प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक सरसों की ढेरी बनाएं सबसे आगे ग्यारह ढेरियों पर **ग्यारह तांत्रोक्त फल** रखें, शेष ढेरियों पर एक-एक सुपारी रखें, ढेरियों के मध्य में **भूत-प्रेत निवृत्ति यन्त्र** स्थापित करें, अब इसके चारों ओर पानी की सात प्रदक्षिणा दें तथा निम्न मन्त्र का १०८ बार **काली हकीक माला** से उच्चारण करें, मन्त्र जप से पहले **भूत-प्रेत निवृत्ति यन्त्र** (ताबीज) का गन्ध अक्षत से पूजन करें और यन्त्र के नीचे भोजपत्र पर निम्न मन्त्र लिख कर रखें।

मन्त्र

।। ह्रीं क्रीं भूताय वश्यै फट् ।।

जब १०८ बार मन्त्र जप हो जाय तो अपने सामने बाधा ग्रसित व्यक्ति पर सामने रखी हुई सरसों में से दाने उठा कर उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए उस पर सरसों फेंकें, यह कार्य २१ बार करें, ऐसा करने पर भूत बाधा ग्रसित व्यक्ति के मुख से भूत आवेश में बोलने लगता है और जो वस्तु की वह मांग करे वह वस्तु उपलब्ध कराएं फिर भूत बाधा पीड़ा नहीं देती।

गृहस्थ साधकों को चाहिए कि इस ताबीज को काले डोरे में पिरो कर जिस दिन श्रेष्ठ चन्द्रमा हो, उस दिन कंठ में धारण कर लें अथवा अपनी सन्तान को पहिना दें, तो उन्हें भूत-प्रेत, डाकिनी, शाकिनी तथा नजर इत्यादि बाधा का सामना नहीं करना पड़ता।

३-लक्ष्मी प्राप्ति अनुष्ठान

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए तो व्यक्ति इस युग में सब कुछ करने को तैयार रहता है, सब माया लक्ष्मी की ही मानी जाती है और लक्ष्मी साधना के प्रधान देव हैं—मणिभद्र, जो साधक मणिभद्र देव का नियमित पूजन करता है और वह भी पुरश्चरण विधान के पश्चात्, तो उसे आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनते हैं। जब मणिभद्र साधक के सामने उपस्थित होते हैं तो उनका रूप बड़ा ही उग्र होता है, उस समय साधक को विचलित नहीं होना चाहिए, बड़ा ही संयम और निष्ठा आवश्यक है। इस साधना हेतु प्रधान रूप से एक नारियल जो कि बजता हो, उस पर तीन टीकी लगाएं तथा अपने घर के पूजा स्थान में जहां

(शेष भाग पृष्ठ संख्या ३६ पर देखें)

लक्ष्मी इस संसार में सब तेरी माया है

लक्ष्मी साधना

चार अनूठे सरल प्रयोग

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि ! भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी !
मन्त्र मूर्तेः सदा देवि ! महालक्ष्मि ! नमोऽस्तुते ॥
आद्यन्त रहिते देवि ! आदिशक्ते ! महेश्वरि !
योगजे योग-सम्भूते ! महालक्ष्मि ! नमोऽस्तुते ॥

लक्ष्मी साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक है, आगे चार विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, इन सरल प्रयोगों का महत्व साधक इन्हें सम्पन्न कर ही समझ सकते हैं —

माया रूपी इस संसार में जो माया है, वह लक्ष्मी ही है, इसके बिना संसार रसहीन, स्वादहीन एवं नीरस हो जाता है और जो लक्ष्मी सिद्धि प्राप्त कर लेता है, वही सांसारिक विजेता माना जाता है, लक्ष्मी साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी पालना तो अत्यन्त आवश्यक है।

लक्ष्मी साधना हेतु भाद्रपद आश्विन एवं कार्तिक माह सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं, इन तीन महीनों में नियम से लक्ष्मी साधना करने वाला साधक इच्छित फल अवश्य ही प्राप्त करता है, ऐसा विधान है कि शुक्ल पक्ष में बृहस्पतिवार श्रेष्ठ माना गया है, और इस दिन यदि पंचमी, दशमी तथा पूर्णिमा तिथि हो तो श्रेष्ठ योग कहा गया है। यदि

किसी गुरुवार को श्रेष्ठ योग न हो तो रवि तथा सोमवार को लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसके अतिरिक्त गुरु पुष्य योग भी श्रेष्ठ योग है। आने वाले समय में विजयादशमी, दीपावली के अतिरिक्त लक्ष्मी साधना का सर्वश्रेष्ठ योग आश्विन पूर्णिमा जिसे शरद पूर्णिमा भी कहा जाता है श्रेष्ठतम योग है. यह दिवस और रात्रि संयुक्त रूप से सिद्धि दिवस कहा गया है, इस दिन को जागरी लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाती है।

यह दिवस कुबेर सिद्धि दिवस भी है, शास्त्रोक्त विधान है कि जब भी लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें, तो लक्ष्मी के साथ-साथ नारायण और कुबेर की साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए। लक्ष्मी की पूजा यदि स्त्री करे तो उसके लिए विशेष सौभाग्य प्राप्त होता है, तथा विवाहित व्यक्ति को जोड़े में अर्थात् पति-पत्नी दोनों को बैठ कर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। लक्ष्मी अन्नपूर्णा भी कही गई है, और जिसके घर में लक्ष्मी की कृपा होती है वहां धन-धान्य की कमी नहीं रहती, जो साधक लकड़ी के एक बर्तन में चार सेर धान्य भर कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर पुष्पों से सजा कर पूजा करता है, उसके घर-परिवार में धन-धान्य की वृद्धि होती है।

यद्यपि लक्ष्मी तथा सरस्वती के सम्बन्ध में आपसी विरोध की बातें बहुत सारी पुस्तकों में लिखी गई है, जब कि वास्तविक स्थिति यह है कि जब भी लक्ष्मी पूजन करें उस दिन प्रातः सरस्वती पूजन अवश्य करनी चाहिए। सरस्वती रहित अर्थात् बुद्धिहीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी कभी भी वास नहीं करती, यह ध्यान रहे। लक्ष्मी साधना में सुगन्धित श्वेत पुष्पों का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है, और यदि संभव हो तो कमल पुष्पों द्वारा लक्ष्मी की पूजा सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी का आसन ही कमल है। लक्ष्मी पूजा में घण्टा नहीं बजाना चाहिए। सुगन्धित द्रव्यों द्वारा अपने सामने लक्ष्मी मूर्ति अथवा चित्र को स्वर्ण आभूषण इत्यादि से विभूषित कर लक्ष्मी पूजा करना चाहिए।

आगे के चार प्रयोग लक्ष्मी साधना के सिद्ध लघु प्रयोग है, जिनकी सरलता में ही इनका प्रभाव छिपा है और जो साधक पूर्ण श्रद्धापूर्वक लक्ष्मी साधना के ये प्रयोग सम्पन्न करता है, उसके घर में लक्ष्मी का वास होता है।

१-गौरवर्णा कमलधारिणी लक्ष्मी प्रयोग

यह विशेष प्रयोग शुक्रवार के दिन सम्पन्न किया जाता है तथा लक्ष्मी के गौर स्वरूप की प्रार्थना कर उनका पूजन किया जाता है, साधक स्वयं भी श्वेत वस्त्र पहिनें श्वेत आसन हो, अपने सामने एक सफेद थाली में श्वेत वस्त्र बिछा कर उस पर सवा पाव चावल की ढेरी बनाएं उस पर गिरी का गोला रखें, गोले पर सफेद चन्दन से लक्ष्मी बीज मन्त्र "श्रीं" लिखें तथा गोले का पूजन करें। अपने सामने लक्ष्मी जी का हाथ में कमल पुष्प धारण किये हुए गरुड़ आसन पर बैठी लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर उसका पूजन करें।

नारियल के गोले के आगे चावल की तीन ढेरी बनाएं एक ढेरी पर **कुबेर गुटिका**, दूसरी ढेरी पर **लक्ष्मी कमल चक्र** तथा तीसरी ढेरी पर **नारायण सिद्धि फल** स्थापित करें, अब मूल पूजन प्रारम्भ होता है, पूजन से पहले घी का दीपक जला दें तथा जब तक पूजन और मन्त्र जप चलता रहे तब तक यह दीपक अवश्य ही जलते रहना चाहिए। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु आज्ञा प्राप्त करें, तत्पश्चात् कुबेर पूजन सम्पन्न करे, कुबेर का ध्यान कर निम्न कुबेर मन्त्र की एक माला का जप करें—

मन्त्र

।। ॐ वैश्रवणाय स्वाहा ।।

तत्पश्चात् नारायण पूजन सम्पन्न करें, इस पूजन में **नारायण सिद्धि फल** पर केसर, कुंकुम विशेष रूप से

अर्पित करें हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र की एक माला फेरें—

मन्त्र

।। ॐ नमो नारायणाय ।।

अब लक्ष्मी पूजन सम्पन्न होता है, सर्वप्रथम एक पुष्प **लक्ष्मी चक्र** के नीचे स्थापित कर ॐ आधार शक्त्यै कमलधारिण्यै सर्व शक्ति सिद्धयै नमः । मन्त्र बोल कर लक्ष्मी का आह्वान करे तत्पश्चत् आगे दूध का बना नैवेद्य तथा सुपारी, पान, लौंग आदि अर्पण करें, तब हाथ जोड़ कर "श्री महालक्ष्म्यै दीपंदर्शयामि नमः" कह कर लक्ष्मी के आगे दीपक रखें।

अब साधक अपने पास एक कटोरा पुष्पों से भर कर रखे तथा निम्न महामन्त्र बोलते हुए एक-एक पुष्प लक्ष्मी मूर्ति तथा लक्ष्मी चक्र के आगे अर्पित करें—

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै
गरुड़ वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा ।।

इस प्रकार १०८ बार मन्त्र जप करना है और यह प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करना आवश्यक है, यदि १०८ पुष्प की व्यवस्था न हो सके तो साधक १०८ पुष्प पंखुड़ियां भी प्रयोग में ला सकते हैं। यह प्रयोग सिद्ध प्रयोग है और रोजगार, व्यापार आदि से सम्बन्धित बाधा हो तो निश्चय ही दूर हो जाती है और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

२- स्वर्ण कान्ती लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग उन साधकों के लिए है जो आर्थिक दृष्टि से थोड़े ठीक हैं, लेकिन इतने अधिक उन्नत नहीं हैं कि अपनी इच्छानुसार धन-वैभव प्राप्त कर रहे हों, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस प्रयोग में भगवती लक्ष्मी की स्वर्ण मूर्ति अथवा भगवती लक्ष्मी की अन्य मूर्ति को सम्पूर्ण रूप से स्वर्ण आभूषणों से मण्डित कर पूजन करना आवश्यक है। इस साधना में लक्ष्मी की नौ शक्तियों का भी विशेष पूजन किया जाता है, ये नौ शक्तियां हैं —

१-विभूति, २-उन्नति, ३-कान्ति, ४-सृष्टि, ५-कीर्ति, ६-सन्नति, ७-पुष्टि, ८-उत्कृष्टि, ९-ऋद्धि।

शुक्रवार के दिन प्रातः अपने सामने बाजोट पर अष्ट-गन्ध से कमलदल बनाएं, मध्य में लक्ष्मी मूर्ति जो कि आभूषणों से मण्डित हो, को स्थापित करें, तत्पश्चात नौ चावल की ढेरियां बनाएं और क्रमशः निम्न नौ सामग्रियां रखें—

१-कार्यसिद्धि चक्र, २-उन्नति चक्र, ३-सिद्धि चक्र, ४-तांत्रोक्त फल, ५-सर्पाकार मुद्रिका, ६-श्री चक्र, ७-कमला-फल, ८-महालक्ष्मी फल, ९-सर्वसिद्धि चैतन्य चक्र।

अब इन शक्तियों का पूजन निम्न प्रकार से करना है-

विं विभूत्यै। उं उन्नत्यै। कां कान्त्यै। सृं सृष्ट्यं। कीं कीर्त्यै। सं सन्नत्यं। पुं पुष्ट्यै। उं उत्कृष्टयै। ऋं ऋद्धयै। श्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय। श्रीं महालक्ष्मी अमृत चैतन्य मूर्त्यै।

इस पूजन में लक्ष्मी की प्रत्येक शक्ति को कुंकुम, केसर, पुष्प, फल, चावल, नैवेद्य अर्पण करना है, और प्रत्येक शक्ति के पूजन के साथ उस शक्ति को नमस्कार करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त करनी है। यह प्रयोग मूल रूप से तो एक लाख पच्चीस हजार मन्त्र जप का है और साधक प्रतिदिन ग्यारह माला सुबह ग्यारह माला शाम अथवा इससे अधिक भी मन्त्र जप **कमलगट्टे की माला**

से सम्पन्न करें। लक्ष्मी साधना में कमलगट्टे की माला का विशेष प्रयोग है।

मन्त्र

श्रीं ह्लीं श्रीं हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णं रजत-स्त्रजां। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

प्रतिदिन शाम को गाय को कुछ भोजन अवश्य दें, तथा जब मन्त्र अनुष्ठान पूरा हो जाय तो दशांश हवन अवश्य करें, लक्ष्मी की यह विशेष साधना महा साधना है और साधक को असीमित धन-धान्य, कीर्ति, समृद्धि प्रदान करने वाली है। इसे सम्पन्न करने वाला साधक लक्ष्मी कृपा से जीवन में कभी भी वंचित नहीं रहता।

३- कनकधारा यन्त्र साधना
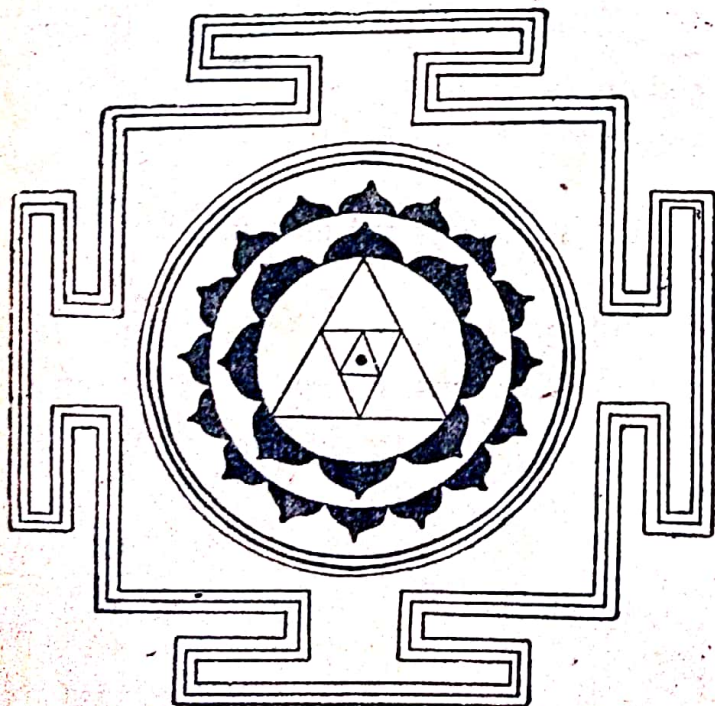
अपने सामने लकड़ी के पीढ़े पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर **कनकधारा यन्त्र** स्थापित कर वस्त्र पर ही चारों ओर 'श्रीं' बीज मन्त्र लिखें, यन्त्र का विधिवत पूजन कर **हल्दी की माला** से निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें—

मन्त्र

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा ॥

तत्पश्चात् श्री सूक्त के तीन पाठ नित्य तथा शुक्रवार को सोलह पाठ करें, इस प्रकार २१ दिन तक मन्त्र जप अनुष्ठान कर हवन करें तो ३८ दिन के भीतर-भीतर इच्छित धन प्राप्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित शुद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए।

अनुष्ठान के पश्चात् यन्त्र को अपने पूजा स्थान में रख दें और नित्य ११ बार उपरोक्त मन्त्र अवश्य बोलें।

४- भक्ति प्रयोग

ऐसा भी माना गया है कि जो साधक नित्य प्रति किसी देव मन्दिर में जाकर श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी बीज मन्त्र से कमला पूजा सम्पन्न करता है, तो उसे निश्चित रूप से आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त होती है इसमें नियम केवल इतना ही है कि यह प्रयोग नित्य प्रति निश्चित समय में सम्पन्न किया जाय इस साधना में संकल्प शक्ति का विशेष महत्व है, ऐसा नहीं है कि कभी सुबह पूजन कर लिया तो कभी शाम को, कोई दिन छुट्टी मना ली। साधना में नियम का पालन अवश्य ही होना चाहिए।

लक्ष्मी साधना के उपरोक्त चारों प्रयोग अत्यन्त सरल प्रयोग हैं और लक्ष्मी अपने भक्तों के गुण अवगुण को न देखते हुए जो उनकी साधना करता है, भक्ति करता है उस पर निश्चित रूप से प्रसन्न होकर शीघ्र फल प्रदान करती है।

शारदीय नवरात्रि के अवसर पर

(२७-६-६२ से ४-१०-६२ तक)

सर्व सिद्धिदायक पर्व : भगवती जगदम्बा की आराधना

सिद्धेश्वरी एवं शूलिनी

दो महासाधनाएं

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में नवरात्रि पर्व मनाने का आनन्द ही कुछ और है, वहां तो शक्ति प्रवाह पूरे वातावरण में रहता है, साधक एक उत्तेजना, एक विद्युत प्रवाह के बीच अपने आपको भुला कर साधना के चरम सीमा पर पहुंच जाता है। जो साधक इस अवसर पर गुरु शक्ति पीठ नहीं पहुंच सकते हैं, उनके लिए पूज्य गुरुदेव ने अपने ही घर में बैठ कर, ये दो साधनाएं करने का आदेश दिये हैं।

भगवती दुर्गा के स्वरूपों में दो शक्ति स्वरूप सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं, इनमें प्रथम है-सिद्धेश्वरी जो कि जीवन में साधक को अभीष्ट सिद्धि प्रदायक है, साधक स्वयं अपने आपको सिद्ध पुरुष बना लेता है, जिससे वह जो भी कार्य हाथ में लेता है, अवश्य ही पूर्ण होता है। दूसरा महत्वपूर्ण स्वरूप है-शूलिनी स्वरूप, जो कि साधक के समस्त रोग, शोक, कष्ट, पीड़ा काटने में समर्थ है। शत्रु सम्बन्धी बाधा, कार्य सम्बन्धी बाधा, धन सम्बन्धी बाधा, पाप दोष निवारण में यही साधना सबसे अधिक अचूक मानी गई है।

शारदीय नवरात्रि के सम्बन्ध में अधिक कुछ लिखना यहां आवश्यक नहीं है। क्योंकि यह समय केवल साधना का समय है, इन नौ दिनों में साधक को सब कुछ भुला कर केवल साधना की ओर ध्यान देना चाहिए। जो कार्य अन्य समयों में सिद्ध नहीं होते, वे कार्य इस नवरात्रि में सरल रूप से सिद्ध हो जाते हैं। क्योंकि भगवती दुर्गा तो विद्युत पुंज है, जिसके आकार से करोड़ों चन्द्रमाओं की शान्त और मोहक ज्योति निकलती है, जिसके तेज और वाणी का निरन्तर जप वाक् काम और शक्ति पुंज कहलाता है जो स्वभाव से नित्य एवं समस्त कारणों की मूल कारण है, वही मां दुर्गा साधक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

१-शूलिनी दुर्गा साधना

बाधाओं के निवारण हेतु शूलिनी साधना से सर्वश्रेष्ठ कहा गया हैं। रोग निवारण, शत्रु संहार, आर्थिक बाधा निवारण हेतु साधक जब शूलिनी दुर्गा साधना करता है तो उसे देवी के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। **महाशैव तन्त्र** में कहा गया है कि—

एतद् यन्त्रं महावीर्य सर्व काम फल-प्रदम्।
युद्धे शत्रु-भये चैव रोगे आपद सकटे॥
समाराध्या शूलिनी वै सर्व कार्याणि साधयेत्॥

अर्थात् जो शूलिनी दुर्गा साधना कर यन्त्र धारण करता है तो यह महाशक्तिमान यन्त्र सभी कामनाओं की पूर्ति करता है। शत्रु रोग, आपत्ति आदि सकटों का मोचन करता है।

यह साधना सोमवार, द्वितीया दिनांक २७-९-९२ को अथवा षष्ठी शुक्रवार, दिनांक २-१०-९२ को प्रारम्भ की जा सकती है।

साधना सामग्री

शास्त्रों के अनुसार साधना स्थल शुद्ध और पवित्र करने के लिए गंगाजल से धो लेना चाहिए या शुद्ध पानी से पवित्र कर लेना चाहिए। फिर साधना स्थल पर ही अच्छी लकड़ी का बाजोट रखना चाहिए और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में चावलों की ढेरी पर दीपक लगाना चाहिए, यह दीपक इस प्रकार का हो जिसकी आठ बत्तियां हों, अर्थात् पीतल या मिट्टी के एक ही दीपक में एक साथ आठ बत्तियां लगानी चाहिए, जो अष्ट दुर्गाओं का प्रतीक है, पूरा मन्त्र जप इसी दीपक पर ध्यान केन्द्रित करके करना है।

उस बाजोट पर बीच में यह दीपक स्थापित हो और बाजोट के चारों कोने पर चार चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक-एक सुपारी रखें, ये सभी महावीर हैं, जो कि कार्य सिद्धि में पूर्ण सहायक हैं, फिर दीपक के दाहिनी ओर गणेश और बायीं ओर क्षेत्रपाल, चावलों की ढेरी बना कर उस पर सुपारी रख कर गणेश एवं क्षेत्रपाल की भावना मन में रखते हुए उनकी स्थापना करनी चाहिए।

इसके बाद दीपक के आगे उसी बाजोट पर एक पात्र में **शूलिनी यन्त्र** की स्थापना करें, तथा इसके चारों ओर आठ चावल की ढेरियां बना कर उस पर सिन्दूर चढ़ावें तथा **अष्ट शूलिनी शक्ति चक्र** स्थापित करें, ये आठ स्वरूप निम्न हैं, इनका ध्यान करते हुए ही ये चक्र स्थापित करने हैं —

१-दुर्गा, २-विन्ध्यवासिनी, ३ असुर मर्दिनी, ४-पातालवालिनी, ५-युद्ध प्रिया, ६-महायोगेश्वरी, ७-जया, ८-विजया।

इसके अलावा जल पात्र, केसर, कुंकुंम, अक्षत, नारियल, पुष्प, फल और नैवेद्य आदि सामग्री की व्यवस्था पहले से ही करके रख लेनी चाहिए, दीपक में शुद्ध घृत का प्रयोग करना चाहिए।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाएं और फिर सर्वप्रथम

कुंकुम तथा केसर को मिला कर दीपक की पूजा करें—

ॐ नमो भगवति दीप-ज्योति-त्रिकोण-संस्थे अखण्ड ज्योति अखण्ड त्रिंशत्कोटि-देवता-मालिनी-निर्मल, अर्द्ध-रात्रि-निगम-स्तुते, ज्वाला मालिनी दीप ज्योति, सर्व कार्य सिद्धि कुरु कुरु नमः ।।

इसके बाद दीपक को जो आठ बत्तियां लगी हुई हैं, उन अष्ट सिद्धियों की पूजा पुष्पों के माध्यम से करें और प्रत्येक सिद्धि को तीन-तीन पुष्प समर्पित करें, इस प्रकार २४ पुष्प समर्पित किये जाते हैं—

ॐ श्रीं ह्रीं अणिमा सिद्ध्यै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं गरिमा सिद्ध्यै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं महिमा सिद्ध्यै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं लघिमा सिद्ध्यै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं प्राप्ति सिद्ध्यै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं प्राकाम्य सिद्ध्यै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं ईशित्व सिद्ध्यै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं वशित्व सिद्ध्यै नमः ।

इसके बाद तीन पुष्प पात्र में स्थापित यन्त्र को निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए समर्पित करें—

।। ॐ ह्रीं श्रीं सर्व सिद्धि दात्र्यै नमः ।।

इसके बाद जो यन्त्र स्थापित किया हुआ है उनके नैऋत्य कोण में एक चावल की ढेरी बना कर उस पर महासिंह का आह्वान इस मन्त्र से करें -

ॐ श्रां वज्र नख वज्र दंष्ट्रायुधाय
महा-सिंहाय हुं फट् नमः ।

इस प्रकार पूजन कर साधक अपने गुरु के चित्र को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, गुरु चरणों का ध्यान कर यह इच्छा प्रकट करें कि उसे शूलिनी साधना में सिद्धि प्राप्त हो ।

इसके बाद सामने जो दीपक लगा हुआ है, उस दीपक की सामने वाली ज्योति पर शूलिनी दुर्गा का ध्यान निम्न निम्न प्रकार से करें—

ध्यान

विभ्राणां शूल-बाणान् असि-हरि-परिघा चाप-पाशा-गदाढ्य,
वन्दे सिंहाधिरूढ़ां मम जननीमहं, श्रद्धया वीर-भद्राम् ।
एषां माता सवेषां सुर-मुनि विनुता शत्रु संहार दक्षा,
नित्या बुद्धा विशुद्धा ज्वलयतु सततं मामकं चित्त दीपम् ।।

विशेष चिन्तन

साधक को दीपक के सामने की ज्योति में दृष्टि रखते हुए, यह ध्यान तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि दीपक में भगवती शूलिनी के दर्शन न हो जाय, इसके लिए यदि साधक चाहें तो त्रिशूल के आकार का दीपक तैयार करवा सकते हैं, और एक ही दीपक में जो आठ बत्तियां लगाई जाती हैं उनमें से बाकी बत्तियां भले ही धीमी गति से प्रज्वलित हों पर सामने जो दीप शिखा है वह रुई की मोटी बाती हो, जिससे कि लौ थोड़ी ऊंची उठी हुई रह सकें और उसमें भगवती शूलिनी के साक्षात् दर्शन हो सकें।

कई साधकों को तो ११ बार या २१ बार ध्यान करने पर ही दर्शन या ज्वाला रूप में प्रकाश दिखाई दे जाता है, अतः साधकों से पूर्ण मनोयोग पूर्वक इस ध्यान का उच्चारण करना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा २१ बार उच्चारण कर सकता है ।

यह साधना रात्रि को या दिन को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, इसके बाद साधक को चाहिए कि वह तांत्रोक्त चण्डी माला से १०८ माला मन्त्र जप करें, इसमें दो विधान हैं, साधक एक ही रात में १०८ माला मन्त्र जप करें या पहले दिन ५४ माला मन्त्र जप करें और शेष दूसरे दिन ५४ माला मन्त्र जप कर साधना को पूर्णता प्रदान करें ।

दूसरे दिन भी साधक मन्त्र जप कर सकता है, पर दिन को ही मन्त्र जप करना चाहिए और मन्त्र जप के

बाद १०८ आहुतियां मूल मन्त्र की दी जानी चाहिए।

किसी पात्र में अग्नि को स्थापित कर एक पात्र में तिल, चावल, शहद, गुड़ और राई मिला कर उसमें घी डाल कर मूल मन्त्र के साथ १०८ आहुतियां दी जानी चाहिए।

मूल मन्त्र

।। ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं क्ष्मूं दुं दुर्गायै नमः ।।

दूसरे दिन जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब तक अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए, साधक प्रथम दिन रात्रि को साधना प्रारम्भ करें और दूसरे दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर शेष मन्त्र जप सम्पन्न कर १०८ आहुतियां पूरी कर दें, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

साधना सम्पन्न करने के बाद यदि सम्भव हो तो किसी ब्राह्मण के यहां भोजन सामग्री भिजवा देनी चाहिए, अथवा किसी कुमारी कन्या को घर में बुला कर उसे भोजन करा कर यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि प्रदान करनी चाहिए, यदि यह सभव न हो तो किसी मन्दिर में जाकर संक्षिप्त भेंट करके साधना सम्पन्न माननी चाहिए।

इसके बाद इस यन्त्र को धागे में पिरो कर अपने गले में बांध लेना चाहिए, या पूजा स्थान में रख देना चाहिए, दीपक में धीरे-धीरे घी समाप्त होने पर अपने आप विसर्जित होने पर उठा कर एक तरफ रख दें, या मिट्टी का दीपक हो तो बाहर फेंक दें, लाल वस्त्र और उस पर जो चावलों की ढेरियां बनाई थी उन सब को इसी लाल वस्त्र में बांध कर किसी मन्दिर में रख देना चाहिए अथवा तालाब में विसर्जित कर देना चाहिए।

वास्तव में शत्रु संहार, रोग निवारण, साधना सिद्धि और प्रत्यक्ष दर्शन के लिए यह पूर्ण सफल और समस्त कार्यों में सिद्धि प्रदायक साधना है।

२-सिद्धेश्वरी साधना

सिद्धेश्वरी साधना जीवन में तीव्र गति से सफलता प्राप्त करने की, अपने कार्यों में सिद्धि प्राप्त करने की साधना है। जब जीवन में एक बार सिद्धि तत्व का समावेश हो जाता है, तो आगे सभी कार्य अपने आप सफल होने लगते हैं। पूर्ण सिद्धि पुरुष बनने के लिए सिद्धेश्वरी साधना से अतिरिक्त अन्य कोई साधना नहीं है। उच्चाटन आकर्षण, कामना-पूर्ति, परिवार रक्षा, शत्रु नाश, स्तम्भन, वशीकरण आदि सभी कार्य इस साधना से सफल होते हैं।

नवरात्रि में विशेष विधान

नवरात्रि के आठ दिनों में यह साधना एक बार अथवा एक से अधिक बार सम्पन्न कर सकता है, इसमें जीवन की विशेष आधार शक्तियों की, नवग्रहों का पूजन किया जाता है, जिससे आधार शक्ति प्रबल होती है, नवग्रह बाधा शान्त होती है।

विधान

यह साधना नवरात्रि के प्रथम दिन अथवा चतुर्थी को प्रारम्भ करनी चाहिए और अष्टमी के दिन इसकी पूर्णाहुति सम्पन्न करें। अपने सामने बाईं ओर एक बाजोट पर पांच चावल की ढेरी बना कर उस पर पांच सुपारी स्थापित करें और निम्न उच्चारण करें—

१-पृथिव्यै नमः, २-आधार शक्त्यै नमः, ३-अनन्ताय नमः, ४-कूर्माय नमः, ५-शेष नागाय नमः,

इस प्रकार से इन पांचों को स्थापित करते हुए इनको प्रणाम करें।

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं समस्त कामनाओं की पूर्ति और पूर्णतः भोग, यश, सम्मान के साथ मनोवांछित कामना पूर्ति के लिए मैं अमुक गोत्र का व्यक्ति अमुक नाम का साधक यह साधना सम्पन्न कर रहा

हूं।

फिर अपनी दाहिनी और एक दूसरे बाजोट पर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **नवग्रह यन्त्र** स्थापित करें, प्रत्येक ग्रह के शान्ति हेतु सामने सुपारी दक्षिणा तथा नैवेद्य रखें और प्रत्येक ग्रह का ध्यान कर हाथ जोड़ कर प्रणाम करें—

१-श्री सूर्याय नमः, २-श्री चन्द्राय नमः, २-श्री भौमाय नमः, ४-श्री बुधाय नमः, ५-श्री गुरवे नमः, ६-श्री शुक्राय नमः, ७-श्री शनिश्चर्यै नमः, ८-श्री राहवे नमः, ६-श्री केतवे नमः।

इस प्रकार नवग्रहों का पूजन कर गुरु ध्यान कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

सिद्धेश्वरी विधान

अब अपने सामने एक पात्र में सिद्धेश्वरी साधना से सम्बन्धित तीन प्रमुख वस्तुएं पूर्ण भक्ति भाव सहित स्थापित करें, इस हेतु पात्र के मध्य में कुंकुम से एक त्रिकोण बनाएं, सबसे ऊपर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **सिद्धेश्वरी सिद्धि चक्र** स्थापित करें नीचे त्रिकोण के दोनों बिन्दुओं पर **सिद्धेश्वरी तांत्रोक्त फल** तथा तीसरे कोने पर **सिद्धेश्वरी वशीकरण चक्र** स्थापित करें और मध्य में शुद्ध घी का एक दीपक स्थापित करें।

साधना में इन तीनों वस्तुओं की विशेष उपयोगिता है, **सिद्धेश्वरी यन्त्र** सर्व सिद्धि प्रदाता है, **सिद्धेश्वरी तांत्रोक्त फल** उच्चाटन, स्तम्भन के लिए प्रयोग होता है, और **सिद्धेश्वरी वशीकरण चक्र** आकर्षण तथा मनोहारी कार्यों के लिए सिद्धि प्रदाता।

अब हाथ में पुष्प लेकर सिद्धेश्वरी देवी का ध्यान करें और यन्त्र के आगे केसर का तिलक कर अक्षत, पुष्प, नैवेद्य चढ़ाएं। तांत्रोक्त फल के आगे सरसों, काले तिल तथा काली मिर्च अर्पण करें तथा सिद्धेश्वरी वशीकरण चक्र के आगे सिन्दूर, सुगन्धित पुष्प तथा काजल से पूजन करें।

अब सिद्धेश्वरी देवी का आह्वान करना चाहिए। यह मन्त्र इस साधना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, यह आह्वान मन्त्र २१ बार अवश्य ही उच्चारण करना चाहिए।

आह्वान मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धेश्वरी सर्व जन मनोहारिणी दुष्ट जन मुख स्तम्भनी सर्व स्त्री पुरुषाकर्षिणी शत्रु भाग्यं त्रोटय त्रोटय सर्व शत्रून् भंजय भंजय सर्व शत्रून् दलय दलय निर्दलय निर्दलय स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय सर्व जन वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि सिद्धेश्वरि इहागच्छ इहातिष्ठ मम मनोवांछित कामना सिद्धयर्थ मम सपरिवारं रक्ष रक्ष सिद्धि देहि देहि नमः।

अब साधक पुनः सिद्धेश्वरी देवी को नारियल की गिरी का नैवेद्य अर्पित करें तथा अपने हाथ में जल लेकर जिस कार्य हेतु, जिस कामना हेतु, जिस इच्छा हेतु जो अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहता है वह संकल्प अवश्य बोलें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धेश्वरी महामाया वशिष्ठ ऋषिः श्री सिद्धेश्वरी देवता, सकल कार्यार्थे सिद्धये जपे विनियोगः।

कई स्थानों पर सिद्धेश्वरी कवच का विशेष महत्व दिया गया है, लेकिन सिद्धेश्वरी साधना में सिद्धेश्वरी की शक्तियों की ही पूजा की जानी चाहिए। और इस हेतु दोनों ओर एक-एक पुष्प रख कर निम्न मन्त्रों द्वारा सिद्धेश्वरी शक्तियों का आह्वान तथा पूजन करना चाहिए। साधना के समय दीपक निरन्तर जलते रहना चाहिए।

अपने बायीं ओर सिद्धेश्वरी की निम्न शक्तियों का ध्यान करते हुए आह्वान निम्न मन्त्र बोलते हुए करना

चाहिए ।

वाम दिशा में

ॐ कालिकायै नमः, ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः, ॐ तारायै नमः, ॐ भगवत्यै नमः, ॐ बगला मुख्यै नमः, ॐ कुंजिकायै नमः, ॐशीतलायै नमः, ॐ त्रिपुरयै नमः, ॐ मात्रिकायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ दिगीशायै नमः ।

मध्यै

ऐं ह्रीं श्रीं हिलि हिलि बन्दी-देव्यै नम , ॐ सम्मोहिन्यै नमः, ॐ मोहिन्यै नमः, ॐ विमोहिन्यै नमः, ॐ वस्वादि-षडंगेस्यो नमः, ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः, ॐ विष्णवेभ्यो नमः, ॐ शिवायै नमः, ॐ उर्वश्यै नमः, ॐ मंजुघोषायै नमः, ॐ सहजन्यै नमः, ॐ सुकेशिन्यै नमः, ॐ तिलोत्तमायै नमः, ॐ गुप्तायै नमः, ॐ सिद्ध कन्याभ्यो नमः ॐ किन्नरीभ्यो नमः, ॐ नाग कन्याभ्यो नमः, ॐ विद्याधरीभ्यो नमः, ॐ किंपुरुषेभ्यो नमः, ॐ यक्षिणीभ्यो नमः, ॐ पिशाचीभ्यो नमः, ॐ ब्रह्माण्यै नमः, ॐ वैष्णव्यै नमः, ॐ इष्ट शान्तयै नम , ॐ गुणाय नमः, ॐ क्रिया शान्त्यै नमः, ॐ ज्ञान शक्त्यै नमः, ॐ रजोगुणायै नमः, ॐ तमोगुणायै नमः ।

अर्पण के लिए जल देकर अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य प्रदान करें ।

दक्षिण (दाहिनी) दिशा में

निम्न नाम मन्त्रों से पुष्पाक्षत् प्रदान करें—

ॐ ह्लूं कार्येभ्यो नमः, ॐ खेचरीभ्यो नमः, ॐ चण्डाख्यायै नमः, ॐ अक्षौहिण्यै नमः, ॐ हुंकार्यै नमः, ॐ क्षेमकार्यै नमः, ॐ पंच भैरवीभ्यो नमः, ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः, ॐ तारायै नमः, ॐ भगवत्यै नमः, ॐ बगलामुख्यै नमः, ॐ कुंजिकायै नमः, ॐ शीतलायै नमः, ॐ त्रिपुण्यै नमः, ॐ मातृ वृकायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ जगदीशायै नमः ।

पश्चिम दिशा में

ऐं ह्रीं श्रीं हिलि हिलि बन्दी देव्यै नमः । ॐ सम्मोहिन्यै नमः, ॐ मोहिन्यै नमः, ॐ विमोहिन्यै नमः, ॐ वस्वादि षडंगेभ्यो नमः, ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः, ॐ वैष्णवीभ्यो नमः, ॐ शिवायै नमः, ॐ उर्वश्यै नमः, ॐ मेनकायै नमः, ॐ रम्भायै नमः, ॐ घृताच्यै नमः, ॐ मंजुघोषायै नमः, ॐ सहजन्यै नमः, ॐ सुकेशिन्यै नमः, ॐ महा भैरवीभ्यो नमः, ॐ इन्द्राण्यै नमः, ॐ असितांगायै नमः, ॐ संहारिण्यै नम, ॐ छिन्नमस्तकायै नमः ।

अब साधक उन सभी शक्तियों का पूजन कर अपने हाथ में दीपक लेकर संकल्प करें कि मैं यह साधना अपने कार्य सिद्धि हेतु सिद्धेश्वरी देवी को समर्पित करता हूं, सिद्धेश्वरी देवी प्रसन्न हों ।

साधक यह साधना नवरात्रि में एक से अधिक बार सम्पन्न कर सकते हैं । नवरात्रि में इस साधना का सर्वोत्कृष्ट फल प्राप्त होता है । ●

नवरात्रि और नवार्ण मन्त्र

शाक्त विज्ञान भगवती दुर्गा का ही सम्पूर्ण स्वरूप है और इसका मूल मन्त्र नवार्ण मन्त्र है। नवरात्रि में ही पूजा क्यों? और नवार्ण मन्त्र का शक्ति स्वरूप अर्थ क्या है? यह जानना आवश्यक है।

आद्या शक्ति मां जगदम्बा भगवती स्वयं कहती हैं—

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममेतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः॥
सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य समन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

"शरद ऋतु में अर्थात् शारदीय नवरात्रि में जो साधक पूर्ण भक्ति भाव से मेरी पूजा साधना करता है तो वह मेरी कृपा से सभी बाधाओं से मुक्त हो जाता है। धन-धान्य, पशु, पुत्र-लाभ और सम्पत्ति से सम्पन्न हो जाता है।

यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि नवरात्रि साधना आदि शक्ति भगवती की उपासना से साधक को भुक्ति अर्थात् भोग और मुक्ति अर्थात् मोक्ष दोनों ही कार्यों में पूर्णता प्राप्त होती है। उपरोक्त श्लोक में मां स्वयं साधक को सम्पूर्ण भोगों का आशीर्वाद दे रही है।

वर्ष में दो नवरात्रियां सबसे अधिक प्रमुख मानी गई हैं। शरद् काल के प्रारम्भ में शारदीय नवरात्रि तथा वर्ष के प्रारम्भ में चैत्र नवरात्रि। दुर्गा सप्तशती में जो सात सौ श्लोक हैं, उनमें महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के स्वरूपों का विधान है और शेष रह जाता है नवरात्रि में तथा इस दुर्गा सप्तशती के पाठ के पहले अनिवार्य रूप से किया जाने वाला नवार्ण मन्त्र का जप। ये दोनों विषय ही दुर्गा पूजा के प्रमुख बिन्दु हैं।

नवरात्रि का तात्पर्य

नवरात्रि शब्द दो अक्षरों से मिल कर बना है, अर्थात् नव+रात्रि, नव शब्द संख्यात्मक है और रात्रि का अर्थ है-काल विशेष। इस प्रकार नवरात्रि शब्द में संख्या तथा काल अर्थात् समय का अद्भुत संयोग है।

नवरात्रि में अखण्ड दीपक जला कर हम अपनी इस "नव की संख्या" पर जो रात्रि का अन्धकार का आवरण छा गया है उसे अप्रत्यक्षतः साधना से हटा कर उसे "विजया के रूप" आत्म विजय का उत्सव मनाते हैं। ध्यान रहे कि यह 'नव सख्या" अखण्ड तथा एक रस ब्रह्म स्वरूप ही है। नौ के किसी भी गुणनफल में अर्थात्— ९, १८–१+८=९, २७–२+७=९, ३६–३+६=९, ४५-४+५=९, ५४-५+४=९, ६३–६+३=९,

७२–७+२=९, ८१–८+१=९, इस प्रकार सब 'नव' की माया है।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार वर्ष को ३६० दिनों का माना गया है और इसमें यदि नव की संख्या का भाग देंगे तो उत्तर४० नवरात्रि आएंगे। तांत्रिक शास्त्र के अनुसार भी ४० की संख्या का विशेष महत्व है। ४० दिनों का एक मण्डल कहलाता है और कोई भी विशेष अनुष्ठान होता ४० दिन तक जप करने से ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। और ४० का दशांश अर्थात् शून्य हटा देने से चार बचता है, और ये चार ही प्रधान नवरात्रि हैं— १-चैत्र नवरात्रि, २-आषाढ़ नवरात्रि, ३-आश्विन नवरात्रि तथा ४-पौष नवरात्रि के स्वरूप हैं और ये चारों मनुष्य के जीवन के चार प्रधान पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्रतीक हैं। इनमें भी धर्म का समन्वय अर्थ से है और काम का समन्वय मोक्ष से है, इस प्रकार मुख्य पुरुषार्थ दो ही नवरात्रि बचते हैं–१-वार्षिक या वासन्तिक नवरात्रि (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक), २-शारदीय नवरात्रि (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक)।

इन दोनों नवरात्रियों की प्रमुखता का विशेष कारण है। मानव जीवन में छः ऋतुओं में से दो ऋतुएं प्रमुख हैं, १-शीत ऋतु, २-ग्रीष्म ऋतु। और दोनों नवरात्रि के युग्म से प्रकृति द्वारा एक में गेहूं अर्थात् (अग्नि) और दूसरे से चावल अर्थात् (सोम) तत्व का उपहार प्राप्त होता है। इसी कारण चैत्र नवरात्रि- १-नवगौरी या परब्रह्म-श्रीराम की नवरात्रि और २-नवदुर्गा या सबकी आराध्या महालक्ष्मी की नवरात्रि के रूप में सर्वमान्य है। इसमें भी किसी प्रकार का कोई भेद न रहे, इस कारण शक्ति तत्व की साधना हेतु भगवती दुर्गा ने अपने स्वयं के वचनों द्वारा ऊपर लिखे श्लोक में शारदीय नवरात्रि की उपासना की बात कही है।

नवार्ण मन्त्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

साधक के लिए यह आवश्यक है कि उसे मन्त्र का पूर्ण अर्थ प्राप्त हो क्योंकि शब्द राशि के अर्थ की भावना ही उसका वास्तविक जप है, अर्थ भावनात्मक मन्त्र जप है. अर्थ भावनात्मक मन्त्र जप से ही इष्ट देव का साक्षात्कार होता है।

"ऐं" यह सरस्वती बीज है, इसमें दो ही अंश हैं–ऐ+बिन्दु। ऐ का अर्थ है सरस्वती और बिन्दु का अर्थ है दुःख नाशक। अर्थात् सरस्वती हमारे दुःख को दूर करें।

"ह्रीं" बीज मन्त्र भुवनेश्वरी बीज मन्त्र है और इस बीज मन्त्र का तात्पर्य है महालक्ष्मी। सदुपात्मक महालक्ष्मी स्वरूप।

"क्लीं" यह कृष्ण बीज, काली बीज एवं काम बीज माना गया है, इसमें क, ल, ई और बिन्दु, चार अंश हैं, जिसका है–कृष्ण या काम, सर्वश्रेष्ठ या इन्द्र, कमनीय, तुष्टी और सुखकर, अर्थात् कमनीय कृष्ण हमें सुख और तुष्टि-पुष्टि दें।

"चामुण्डायै" में चा–चित्त, मु-मूर्त सद्रूप और ण्डा (न्दा)–आनन्द रूप। अर्थात् सत् चित् आनन्द रूपा चामुण्डा देवी को। विच्चे-विद् अर्थात् जानने योग्य 'च'-चिन्तयाम अर्थात् चिन्तन करें। 'ई' अर्थात् गच्छाम् चेष्टा करें, इसमें भी अन्तिम 'ई' शब्द का तात्पर्य है कि (यान्चामहें) अर्थात् याचना करते हैं।

इस प्रकार पूरे मन्त्र का भावार्थ यह निकलता है कि हम महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती नामक तीन मूर्तियों से विशेष तथा सत्तचित्त आनन्ददायक आध्यायोग माया को प्राप्त करने के लिए पूजा एवं ध्यान द्वारा उसे जानते हैं, याचना करते हैं, यही शक्ति पूर्ण शक्ति है और यह भावना सद्गुरुदेव द्वारा ही शिष्य में प्रवाहित की जाती है। **भावनोपनिषद** में लिखा है कि—श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः। तेन नवरंध्ररूपो देहः।

शक्ति उपासना में समस्त क्रियाओं के कारणभूत शक्ति श्री गुरुदेव ही हैं और उनके साथ नवरन्ध्र रूप देह अभिन्न है। ●

सिद्धाश्रम "गोल्डन कार्ड" योजना

"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" की एक अनूठी गौरवशाली योजना जिसके द्वार खुले हैं, आप सबके लिए इस योजना का विवरण पूरा पढ़ें, विचार करें, प्रस्तुत है आलेख—

गुरु शब्द की व्याख्या गुरु महानता का वर्णन और गुरु कृपा का अमृत फल पाना हर एक के वश की बात नहीं, शिष्य प्रारम्भिक अवस्था में बड़ा ही चतुर जीव होता है, वह गुरु का चयन बहुत ही सोच समझ कर करता है, गुरुदेव मन ही मन शिष्य की इन भावनाओं को देखते हुए मुस्कराते हैं, वे कुछ कहते नहीं, गुरुदेव तो अपने हृदय कपाट खुले रखते हैं, शिष्य को अपने भीतर समा लेने के लिए, उसे नवरंग से भी अनूठे गुरु रंग से सराबोर करने के लिए।

प्राचीन काल में शिष्य अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में अपने गुरु के पास रहता था, गुरु उसे हर प्रकार का ज्ञान देकर संसार के माया चक्र में विजय प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के ज्ञानास्त्र, चेतनास्त्र देकर भेज देते थे, उसके बाद भी जब भी शिष्य को कोई कठिनाई आ पड़ती, जीवन में किसी चक्रव्यूह में उलझ जाता तो वह मार्ग प्राप्त करने के लिए वह सीधा अपने गुरु के पास ही दौड़ता था, क्योंकि उसे मालूम था कि सही ज्ञान, सही दिशा और संकटहारण का मार्ग केवल अपने सद्गुरु देव के पास ही मिल सकता है।

आज भी वही सम्बन्ध है

कहते हैं कि समय बदलने से, युग बदलने से सम्बन्ध बदल जाते हैं, लेकिन जहां तक सच्चे गुरु और शिष्य का सम्बन्ध है, उस परम्परा में आज भी वही भक्ति वही श्रद्धा और गुरुदेव द्वारा वही प्रेम, स्नेह और कृपा की परम्परा विद्यमान है। इस सम्बन्ध में कहीं कोई लुकाव-छुपाव नहीं है, शिष्य जो बात अपने मां-बाप, भाई, पत्नी

अथवा मित्र को नहीं कह सकता, वह सब बात अपने गुरुदेव के समक्ष आकर स्पष्ट रूप से कह देता है, क्योंकि उसे मालूम है कि यहां गुरुदेव के समक्ष बात खुल कर ही कहनी पड़ेगी, केवल मीठी-मीठी बातें करने से काम नहीं चलेगा, जो सर्वज्ञाता है, उनसे क्या छिपाया जाय ?

पूज्य गुरुदेव ने जब संन्यास से पुनः सांसारिक जीवन में प्रवेश किया तो उसके पीछे उनकी एक विराट विचारधारा थी, स्व-कल्याण को छोड़ कर जन-कल्याण, सर्वजनहितार्थ भावना थी, इसके लिए पूज्य प्रभु ने ज्ञात-अज्ञात साधकों के लिए, शिष्यों के लिए एक नव चेतना का मार्ग जो सीधी सरल भाषा में उनके लिए साधना साहित्य का क्रियात्मक स्वरूप था, जो संस्कृत नहीं जानते थे, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति को भूल गये थे, जिनके पास जीवन में केवल मानसिक और शारीरिक कष्ट की वृद्धि हो गई थी उनके लिए नवीन मार्ग का यह पीड़ाहारी पाञ्चजन्य घोष था, जो 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' संस्था "सिद्धाश्रम साधक परिवार' के नाम से जाना जाता है।

इस मार्ग में, इस यात्रा में आह्वान था उन शिष्यों को जो पूज्य गुरुदेव से जुड़ कर अपने जीवन को आलोकित करना चाहते थे, उनका अनुसरण कर अपने भीतर और बाहर के दोषों का नाश करना चाहते थे, जीवन को एक नई दृष्टि से देखना चाहते थे, लोग, साधक आते गये संस्था से जुड़ते गये और धीरे-धीरे एक विशाल परिवार की स्थापना हुई, पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जीवन में देना और लेना यह एक व्यापारिक कार्य है। मैं शिष्यों को मार्ग दिखाऊंगा, उन्हें स्वयं साधना की अग्नि में तपना पड़ेगा, शिष्यों को मैं मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र का व्यावहारिक ज्ञान दूंगा तभी वे इसके मूल महत्व को समझेंगे और इस महान धरोहर को अपने पास रख कर इसे अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में उपयोग में लाएंगे।

इसी शृंखला में शिविरों का आयोजन हुआ, इन शिविरों में जो कि गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में हुए और कई बार शिष्यों के आग्रह एवं अनुरोध पर भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित हुए, आज स्थिति यह है कि पूरे वर्ष भर में चार शिविर जोधपुर में और छः शिविर जोधपुर से बाहर आयोजित हो ही जाते हैं। यह सब शिष्यों के लिए, साधकों के लिए ही तो था, साधना किस प्रकार की जाती है और साधना से प्रत्यक्षतः किस प्रकार अनुभव किया जाता है और साधना के तात्कालिक और दीर्घकालिक लाभ क्या है यह सब एक-दो नहीं हजारों शिष्यों ने अनुभव किया, कष्ट-पीड़ा भोगते हुए शिष्यों और साधकों के जीवन पर इन शिविरों में गुरुदेव के अमृत वचनों द्वारा एक अमृत वर्षा हुई जहां शिष्य है, शिविर है और साक्षात् गुरुदेव विद्यमान हैं वहां सिद्धि तो प्राप्त हो कर ही रहेगी।

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

पिछले कुछ समय से कई शिष्यों के पत्र आये कि गुरुदेव हम प्रत्येक शिविर में भाग लेना चाहते हैं, हर शिविर में सभी साधनाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहते हैं, लेकिन कुल मिला कर व्यय अधिक बढ़ जाता है, इसके लिए वर्तमान में जो आर्थिक स्थिति है, वह हमें बार-बार आपके पास आने से रोकती है, क्या इस सम्बन्ध में कोई उपाय हो सकता है तो हमें इस संकट से पार उतार कर अनुग्रहीत करें। निश्चय ही शिष्यों का यह कहना सही था और गुरुदेव ने एक विशेष योजना हेतु हमें स्वीकृति दी है, जिसका प्रारूप निम्न प्रकार से है—

१- निखिल ध्यान धारक शाश्वत योजना के अन्तर्गत साधक भारतवर्ष में होने वाले किसी भी शिविर में निःशुल्क भाग ले सकता है।

२- यदि कोई शिष्य किसी शिविर में भाग न ले सके तो वह अपने स्थान पर किसी अन्य को अथवा अपने परिवार के सदस्य को भाग लेने भेज सकता है।

३- प्रत्येक शिविर में होने वाली साधनाओं की सभी सामग्री उनके लिए निःशुल्क रहेगी।

४- इस योजना के अन्तर्गत भाग लेने वाले सदस्य स्वर्णांकित सदस्य (गोल्डन कार्ड होल्डर मेम्बर) कहे जाएंगे।

५- गोल्डन कार्ड होल्डर मेम्बर को पत्रिका निःशुल्क भेजी जायेगी और प्रत्येक अंक में प्रकाशित साधनाओं में से कोई एक साधना (जिसका चयन वे स्वयं लिखेंगे) से सम्बन्धित सामग्री रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा निःशुल्क भेजी जायेगी।

६- प्रत्येक साधना शिविर में आगे की पंक्तियों में उनके लिए स्थान सुरक्षित रहेगा।

७- गोल्डन कार्ड होल्डर मेम्बर को केवल एक बार धरोहर के रूप में रुपये १५०००) जमा कराने होंगे और यह पैसा बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नगद मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान कार्यालय में जमा कराना होगा जिसकी रसीद वे प्राप्त कर सकेंगे। यदि एक साथ संभव न हो तो इसे तीन बराबर किश्तों में दे सकते हैं पर प्रत्येक किश्त एक महीने से ज्यादा अन्तराल में न हो।

८- यह धनराशि धरोहर धनराशि है और जब तक सदस्य चाहें इस योजना के अन्तर्गत भाग ले सकते हैं, जब वे अपना यह गोल्डन कार्ड सरन्डर करना चाहें वे कर सकते हैं और इसकी लिखित सूचना तथा नोटिस रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा कार्यालय को अवश्य भेज दें।

९- इस प्रकार का नोटिस प्राप्त होने के दस वर्ष बाद उन्हें मूल धनराशि पुनः एकाउन्ट पेई चैक द्वारा लौटा दी जायेगी। इस धनराशि पर किसी प्रकार का कोई ब्याज नहीं दिया जायगा।

१०- फिलहाल मात्र एक सौ गोल्डन कार्ड धारक बनाये जाएंगे।

यह तो इस योजना का मोटा-मोटा प्रारूप है, इस सम्बन्ध में जो भी और जानकारी चाहें तो पत्रिका कार्यालय को पत्र लिख कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सिद्धाश्रम साधक परिवार में कुछ विशेष योजनाएं बनाई गई हैं, जिसमें कार्यालय का विस्तार आने वाले साधकों के लिए आश्रम में ठहरने की उचित व्यवस्था भारतवर्ष में ग्यारह स्थानों पर केन्द्रिय कार्यालय के अन्तर्गत विशेष केन्द्रों की स्थापना और इन्हीं सब उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त योजना आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। इस योजना में भागीदार बनकर आप अपने लिए तो लाभ प्राप्त करेंगे ही 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' के प्रति भी आपका यह अमूल्य सहयोग रहेगा और आपका एक बार का किया हुआ सहयोग एक आदर्श बनेगा, हजारों-हजारों साधकों के लिए प्रकाश पुंज बन सकेगा। ●

(पृष्ठ संख्या २० का शेष भाग)

साधना करनी है वह स्थान गोबर से लीप दें और लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछा कर इस नारियल को स्थापित कर उस पर "ॐ मणिभद्रायै फट्" लिखें और इसका पंचोपचार पूजन करें पंचोपचार पूजन में पांच चीजें प्रयुक्त होती हैं—(१) गन्ध-कुंकुम, केसर, अबीर-गुलाल, (२) पुष्प, (३) धूप, अगरबत्ती, (४) दीप, (५) नैवेद्य. इससे पूजन करना आवश्यक है, नारियल के आगे एक छोटे से ताम्र पात्र में ताबीज रूप **मणिभद्र यन्त्र** स्थापित करें और दोनों ओर लक्ष्मी की आठ शक्तियों के स्वरूप **आठ मणिभद्र सिद्धि चक्र** स्थापित कर इनका भी पूजन इन सब सामग्री से करें। नित्य प्रति पूजा में ताजे पुष्प अवश्य लाएं।

अब साधना में साधक सबसे पहले संकल्प लें और गुरु पूजन करें, भैरव पूजन करें जिससे साधना में कोई व्यवधान न आये, कोई डर न लगे। तत्पश्चात् नीचे लिखे गये मणिभद्र मन्त्र का प्रतिदिन एक हजार जप करना है, यह मन्त्र जप केवल "कमलगट्टा माला" से ही सम्पन्न किया जाता है—

मन्त्र

ॐ नमो मणिभद्राय आयुध-धराय मम लक्ष्मीं वांछितं पूरय पूरय ऐं ह्लीं क्लीं ह्यीं मणिभद्राय नमः ॥

इस प्रकार नियमित पूजन और मन्त्र जप करने से साधक को २१ दिन बाद रात्रि में कुछ विशे संकेत प्राप्त होते हैं। मैंने अनुभव किया है कि मणिभद्र देव अपने उग्र रूप में प्रकट होते हैं और प्रसन्न होकर साधक को लॉटरी, जुएं, सट्टे इत्यादि का नम्बर भी देते हैं। यदि किसी को अपने घर में धन गड़ा हुआ होने की आशंका है, तो वह मणिभद्र देवता की कृपा से उसे निश्चित जानकारी प्राप्त हो सकती है।

२१ दिन की साधना के पश्चात् पूजा में प्रयुक्त नारियल को पीले कपड़े में बांध कर घर के सन्दूक या तिजोरी में रख देना चाहिए।

४-जिह्वा कीलन एवं शत्रु विद्वेषण अनुष्ठान

साधकों को चाहिए कि जब तक कोई शत्रु उन्हें प्रत्यक्ष हानि पहुंचाने का प्रयास न करे अथवा शत्रु ने झूठा मुकदमा, अथवा मानहानि न की हो, तब तक विशेष तांत्रिक प्रयोगों से बचना चाहिए, यह ध्यान रखें कि असत्य बोलने वाले और दुराचारी साधक कितनी ही साधना करे, देवता उस पर अपनी कृपा नहीं करते।

शत्रु पीड़ा बढ़ जाय तो किसी एकान्त स्थान पर जा कर आक के पत्ते पर चिता भस्म की स्याही बनाकर लोहे की सलाख से निम्न मन्त्र लिखें यहां अमुक के स्थान पर अपने शत्रु का नाम लिखें और **सात भैरव चक्र** स्थापित करें तथा पत्ते और भैरव चक्र के चारों ओर काले तिल का घेरा बना दें।

मन्त्र

ॐ नमो आकाश पूरिणि पाताल पूरिणि मधु-मांस-आहार भक्षिणी अमुकस्य जिह्वां कीलय कीलय स्वाहा ॥

अब इस मन्त्र का १०१ बार जप कर आक के पत्ते को कील सहित जमीन में गाड़ दें, यह प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करें भयंकर से भयंकर शत्रु भी परास्त हो जाता है शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह साधक की इच्छानुसार कार्य करने लगता है।

नियमित रूप से पुरश्चरण सम्पन्न कर ये चारों प्रयोग सम्पन्न करने चाहिए, पुरश्चरण के अभाव में इन साधनाओं की कोई उपयोगिता नहीं है, ये प्रयोग साधकों के लिए वरदान हैं, और उनके जीवन की समस्याओं को सहज रूप से सुलझाने में सहायक हैं। ●

तांत्रोक्त सिद्धि दिवस

कुबेर साधना का विशिष्ट प्रयोग

तांत्रिक पर्व पर विशेष साधनाएं करने से फल प्राप्ति तत्काल होती है, कुबेर साधना का यह अनोखा अनुष्ठान इस शनैश्चरी अमावस्या के दिन अवश्य ही सम्पन्न करें—

शनैश्चरी अमावस्या का नाम अमावस्या के दिन शनिवार दिवस पड़ने से हुआ है और जब यह योग बनता है तो तांत्रिक योग कहा जाता है, इस अवसर पर तन्त्रात्मक साधनाओं पर जोर विशेष रूप से देना चाहिए, कुबेर साधना के लिए इससे अधिक कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं हो सकता है। कुबेर साधना निम्न कार्यों के लिए विशेष रूप से सम्पन्न की जाती है—

१- घर में हर समय धन-धान्य की कमी बनी रहती है।
२- आय का साधन तो होता है पर आय से अधिक व्यय हो जाता है।
३- चोरी अथवा धोखे इत्यादि के कारण धन की हानि होने की संभावना हो।
४- व्यापार कार्य में वृद्धि न हो।
५- किसी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए धन की व्यवस्था न हो पाये।
६- बन्धु-बान्धव, मित्रगणों द्वारा धन ले लिया गया हो।
७- परिवारिक धन-सम्पत्ति उचित रूप से प्राप्त न हुआ हो।
८- किसी ने आपसे कर्ज लिया हो और वह धन वापस न आ रहा हो।

उपरोक्त सभी स्थितियों में कुबेर साधना ही सर्वश्रेष्ठ साधना रहती है, कुबेर मूल रूप से संग्रह के देवता माने गये हैं, क्योंकि देवताओं के कोषाध्यक्ष होने के कारण इनकी जिम्मेदारी रहती है कि भण्डार सदा भरा रहे। जिस मात्रा में आवक हो, उससे अधिक खर्च न हो और आवक में निरन्तर वृद्धि होती रहे। इसीलिए जो साधक कुबेर की साधना सम्पन्न करता है, उसके भी घर में भण्डार भरे रहते हैं, अर्थात् हर समय पैसे की आवक बनी रहती है और खर्च में न्यूनता आती है।

कुबेर साधना के कुछ प्रयोग पत्रिका में पहले दिये गये हैं और आज उसी क्रम में एक विशेष तांत्रिक प्रयोग स्पष्ट किया जा रहा है, इस प्रयोग की विशेष बात यह है कि यह केवल निश्चित दिन शनैश्चरी अमावस्या को ही सम्पन्न करें।

तांत्रोक्त कुबेर साधना–विशेष नियम

— कुबेर साधना रात्रि को ही सम्पन्न करनी चाहिए।
— सम्पूर्ण प्रयोग सात दिन का है, तथा शनैश्चरी अमावस्या को प्रारम्भ कर आगे सात दिन निरन्तर यह अनुष्ठान करना चाहिए।

— साधक का मुंह उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए।
— यन्त्र पूजन के अतिरिक्त पीपल की लकड़ी से यन्त्र प्रतिदिन कागज पर अष्टगन्ध से अवश्य लिखना है।
— धूप तथा दीप प्रतिदिन अवश्य करना है, दीपक तेल का होना चाहिए।
— मौन रह कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए और साधना के पश्चात् ही भोजन करें।

विशेष सामग्री

तांत्रोक्त कुबेर धनदा यन्त्र, शनि यन्त्र, (पुरुषाकार) सात तांत्रोक्त नारियल, पीपल की लकड़ी, अष्टगन्ध, चन्दन इत्यादि।

विधान

शनैश्चरी अमावस्या तारीख २६-९-९२ को स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें, अपने सामने एक पीढ़े पर सर्वप्रथम एक कोने में तिल की ढेरी बनाकर उस पर **शनि यन्त्र** स्थापित कर उसका पूजन सिन्दूर से कर एक तेल का दीपक और अगरबत्ती जलाएं, यन्त्र के चारों ओर सात बार प्रदक्षिणा कर निम्न शनि मन्त्र की एक माला का जप करें—

॥ ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

अब अपने सामने एक ताम्र पात्र में **कुबेर यन्त्र** स्थापित करने से पहले स्वस्तिक का चिन्ह चन्दन से बनाएं और उस पर पुष्प तथा चावल रख कर मध्य में **कुबेर यन्त्र** स्थापित करें। एक ओर तेल का दीपक तथा दूसरी ओर घी का दीपक जला दें तथा भगवान शिव से प्रार्थना करें कि "हे शिव ! जिस प्रकार आपने कुबेर को अनन्त धन-धान्य से विभूषित किया उस कुबेर की पूर्ण कृपा मुझे प्राप्त हो", ऐसा कह कर तीन ताली बजाएं, अब गन्ध अक्षत, जल, मौली, प्रसाद इत्यादि से कुबेर यन्त्र का पूजन कर सामने दिये गये चित्र के अनुसार कुबेर का अंक-चित्र तथा निम्न मन्त्र कागजों पर २० बार अष्टगन्ध से निर्मित करें, ये कागज कुबेर यन्त्र के आगे रख कर निम्न कुबेर मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ ह्लीं क्रौं श्रां अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पाकोत्पादको-
त्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धि-कराय वासुदेवाय नमः ॥

इस प्रकार अष्टगन्ध से यह मन्त्र २० बार लिखना है, तथा प्रातः उठ कर इन सब मन्त्र लिखे कागजों को तांत्रोक्त नारियल के साथ एक लिफाफे में काले डोरे से बांध कर भगवान शिव का ध्यान कर शिव मन्दिर में अथवा किसी जलाशय में अर्पित कर दें।

सातवें दिन १२०+६० इस प्रकार कुल १८० बार यह मन्त्र व यन्त्र लिखना है और सात दिन पूर्ण होने पर शनि ध्यान, शिव ध्यान और कुबेर ध्यान कर अनुष्ठान पूर्ण करें। इस प्रयोग का फल ७२ दिन के भीतर-भीतर प्राप्त होता है। अर्थ (धन) सम्बन्धी जो कार्य रुक जाते हैं, वे शुरू होते हैं। 'मन्त्र महाकौमुदी' में लिखा है कि जो साधक यह अनुष्ठान सम्पन्न करता है, वह कुबेर के सदृश हो जाता है, "मनसा प्रार्थितं सर्व कार्यं कुर्वन्न संशयः"। उनके मन की इच्छानुसार कार्य होते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। यह अनुष्ठान श्रेष्ठ तांत्रिक प्रयोग है, इसके नियमों का पूर्णतः पालन करते हुए, धन की इच्छा रखने वाले साधक को यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। ●

(पृष्ठ संख्या १२ का शेष भाग)

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु
मां निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु
सर्वकालम् ।।

अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां स्थाणुः सदा पातु
बहि स्थितं माम् ।
तदनन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां
समन्तात् ।।

तिष्ठन्तमव्याद् भुवनैकनाथाः पायाद व्रजन्तं
प्रथमाधिनाथः ।
वेदान्त-वेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः
शयानम् ।।

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु
पुरत्रयारि ।
अरण्यवासादि-महाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदार-
शक्तिः ।।

कल्पान्त-काटोप-पटु-प्रकोप-स्फुटाट्टहासोच्च
लिताण्डकोशः ।
घोरारि-मेनार्णव दुर्निवार-महाभयाद् रक्षतु
वीरभद्रः ।।

पत्त्यश्व-मातङ्ग-रथावरूथ-सहस्र लक्षायुत-कोटि-
भीषणम ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनाश्छिन्द्या-न्मृडो घोर-
कुठार-धारया ।।

निहन्तु दस्यून् प्रलया-निलार्च्चिज्ज्वलन् त्रिशूलं
त्रिपुरान्तकस्य ।
शार्दूल-सिंहर्क्ष-वृकादिहिंस्रान् सन्त्रासयत्वीश-
धनुः पिनाकः ।।

दुःस्वप्न-दुःशकुन-दुर्गति-दौर्मनस्य-दुर्भिक्ष-दुर्व्यसन-
दुःसह-दुर्यशांसि ।
उत्पात-ताप-विष-भीतिमसद्ग्रहार्ति-व्याधींश्च
नाशयतु मे जगताम-धीशः ।।

इस अमोघ रक्षा कवच का ग्यारह बार पूर्ण भक्ति भाव से जप करना है, ११ बार कवच पाठ के समय धूप, दीप पूर्ण रूप से जलते रहना चाहिए तत्पश्चात् शिव आरती सम्पन्न करनी है ।

यह अनुष्ठान पूर्ण हो जाने के पश्चात् प्रसाद ग्रहण करें और शिव मन्दिर में जाकर शिव का दर्शन कर अपनी साधना में पूर्ण सफलता की प्रार्थना करें ।

अमोघ सिद्धि प्रदायक **शिव रक्षा कवच** को काले धागे से गले या बांह में धारण कर लें और चौबीसों घण्टे धारण किये रहें, इस रक्षा कवच का इतना अधिक प्रभाव रहता है कि यदि इसे किसी ताम्र पात्र में जल भर कर रखा जाय और ग्यारह बार ऊपर लिखे शिव कवच का पाठ कर यह जल किसी रोगी को पिला दिया जाय तो उसे तत्काल शान्ति प्राप्त होती है । **शिव यन्त्र** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें ।

किसी विशेष यात्रा पर अथवा किसी विशेष कार्य हेतु जाते समय इसे अपने हाथ में रख कर पांच बार उपरोक्त शिव स्तोत्र का पाठ कर साधक पुनः धारण कर जिस कार्य के लिए भी जाता है वह कार्य पूर्ण होता है ।

शिव साधना का यह अनोखा अनुष्ठान शीघ्र फल-दायक और रक्षाकारक है, इसमें शिव और शक्ति दोनों का समावेश है और साधक को अपने जीवन में शिव भाव और शक्ति भाव दोनों पूर्ण रूप से प्राप्त होते हैं ।

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
शिव सिद्धि अमोघ कवच	६	अमोघ शिव कवच	१२०)रु०
		शिव यन्त्र	१०५)रु०
		रुद्राक्ष माला	३००)रु०
पुरश्चरण विधान	१७	—	—
१-रोग एवं अपमृत्यु निवारण अनुष्ठान	१६	तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष	१२०)रु०
		ग्यारह हकीक पत्थर	४४)रु०
२-भूत-प्रेत निवारण अनुष्ठान	२०	ग्यारह तांत्रोक्त फल	१२१)रु०
		भूत प्रेत निवृत्ति यन्त्र (तावीज)	१२०)रु०
		काली हकीक माला	१२०)रु०
३-लक्ष्मी प्राप्ति अनुष्ठान	२०	मणिभद्र यन्त्र	१५०)रु०
		आठ मणिभद्र सिद्धि चक्र	१६०)रु०
		कमलगट्टा माला	८०)रु०
४-जिह्वाकीलन एवं शत्रु विद्वेषण अनु०	३६	सात भैरव चक्र	१४०)रु०
लक्ष्मी साधना	२१	—	—
१-गौरवर्णा कमलधारिणी लक्ष्मी प्रयोग	२२	कुबेर गुटिका	१५०)रु०
		लक्ष्मी कमल चक्र	६०)रु०
		नारायण सिद्धि फल	६०)रु०
२-स्वर्णकान्ती लक्ष्मी प्रयोग	२३	(पैकेट)	२६०)रु०
		कमलगट्टा माला	८०)रु०
३-कनकधारा यन्त्र साधना	२४	कनकधारा यन्त्र	२४०)रु०
		हल्दी माला	१२०)रु०
दो महा साधनाएं—	२५	—	—
१-शूलिनी साधना	२६	(सम्पूर्ण साधना सामग्री पैकेट)	३००)रु०
२-सिद्धेश्वरी साधना	२८	,, ,,	३००)रु०
कुबेर साधना	३७	तांत्रोक्त कुबेर धनदा यन्त्र	१२०)रु०
		शनि यन्त्र	४५)रु०
		सात तांत्रोक्त नारियल	७७)रु०
		कुबेर यन्त्र	१५०)रु०

महालक्ष्मी सरस्वती से ही हुआ है। सन्तान की बुद्धि तीक्ष्ण करने हेतु, स्वयं वाक् सिद्धि प्राप्त करने हेतु, वाणी में सरसता एवं माधुर्य उत्पन्न करने हेतु शरद पूर्णिमा सर्वश्रेष्ठ सिद्धि दिवस है।

ये तीनों प्रयोग सहज प्रयोग नहीं हैं तीनों के क्षेत्र अलग-अलग हैं, प्रत्येक का विधान अलग अलग है। तथा गुरुदेव के निर्देशन में शक्ति पीठ क्षेत्र में ही शरद पूर्णिमा के ये अनुष्ठान सम्पन्न करने चाहिए।

शरद पूर्णिमा महोत्सव वर्ष में केवल एक बार ही आता है और इसका समय केवल सायंकाल सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक ही है, इन १२ घण्टों का अत्यधिक महत्व है।

कई शिष्यों ने गुरुदेव से प्रार्थना की, कि इतने महत्वपूर्ण सिद्ध महोत्सव पर पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ही ये विशेष अनुष्ठान सम्पन्न हों तो अति कृपा होगी, अतः पूज्य गुरुदेव ने इस सम्बन्ध में स्वीकृति प्रदान कर दी है।

इन प्रयोगों हेतु एक दिन के विशेष शिविर का आयोजन **गुरु शक्ति पीठ जोधपुर** में रखा गया है।

इस शिविर में भाग लेने की स्वीकृति केवल पत्रिका सदस्यों को ही प्रदान की जायेगी।

सन्तान सम्बन्धी बाधा, रोग निवृत्ति इत्यादि प्रयोग हेतु पति-पत्नी दोनों साथ बैठ कर अनुष्ठान करें तो ज्यादा उचित रहेगा।

परिवार का यदि कोई सदस्य रोगी है और उसके रोग निवारण हेतु यह अनुष्ठान सम्पन्न करना है तथा यदि रोगी को यहां नहीं ला सकें तो उसका चित्र अवश्य लेकर आएं, रोगी के नाम का संकल्प भर कर उसके लिए परिवार का कोई भी सदस्य यह अनुष्ठान सम्पन्न कर सकता है।

सरस्वती सिद्धि अनुष्ठान सन्तान की बुद्धि, वाक् शक्ति चैतन्य करने का विशेष प्रयोग है, और यह प्रयोग उनके माता-पिता सम्पन्न कर सम्बन्धित यन्त्र बालकों के गले में पहना दें तथा सहज ही इस चमत्कारिक प्रयोग का प्रभाव देख सकते हैं।

जो साधक इस आयोजन में भाग लेना चाहते हैं वे सूचना समय रहते अवश्य भिजवा दें, क्योंकि पूज्य गुरुदेव केवल सौ शिष्यों को ही यह अनुष्ठान सम्पन्न कराएंगे।

इन तीनों अनुष्ठान हेतु शुल्क ३५१) रु० रखा गया है, जिसमें आवश्यक पूजन सामग्री, साधना सामग्री का व्यय सम्मिलित है।

शरद पूर्णिमा महोत्सव का शुभारम्भ ११-१०-९२ को सायंकाल सिद्ध मुहूर्त में शुरू कर दिया जायेगा। भाग लेने वाले साधक ११-१०-९२ को दोपहर तक **गुरु शक्ति पीठ जोधपुर** अवश्य ही पहुंच जाएं।

प्रत्येक अनुष्ठान में ७ प्रकार की सामग्री का प्रयोग होगा और प्रत्येक अनुष्ठान में कम से कम तीन घण्टे अवश्य लगेंगे, इस प्रकार यह अनुष्ठान पूरी रात्रि चलते रहेंगे। ●

रजि० सं० : ११३०५/८१ पोस्टल पंजी०प्रार०कं० : ३६६७/८६-८७

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

द्वारा रचित

मुहूर्त ज्योतिष

★ काफी समय से यह ग्रन्थ अप्राप्य था, पाठकों, साधकों एवं शिष्यों की मांग अत्यन्त तीव्रता से थी, जिससे कि प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने का मुहूर्त स्वयं समझ सकें, और उस सफलता युक्त समय का उपयोग कर सकें।

नई साज सज्जा एवं उत्तम कागज पर पुनर्मुद्रित यह ग्रंथ अब उपलब्ध है।

अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप हमें पत्र द्वारा सूचित कर दें, हम आपको २०) रुपये मूल्य तथा डाक व्यय जोड़ कर इस ग्रन्थ को सुरक्षित रूप से आप के पास पहुंचाने की व्यवस्था कर रहे हैं।

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

★★ आपकी व्यक्तिगत, पारिवारिक, आर्थिक या अन्य कोई भी समस्या हो, आप हमें लिख भेजें, हम आपको इस सम्बन्ध में निःशुल्क परामर्श तो देंगे ही, साथ ही वह प्रयोग या उपाय भी लिख भेजेंगे, जिससे आप उस समस्या से तुरन्त एवं निश्चित मुक्ति पा सकें।

उत्तर के लिए समुचित टिकट तथा आपका पता लिखा लिफाफा साथ में आना आवश्यक है।

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)